गंगा क्यों

बने एक राष्ट्रीय नदी प्रतीक?

राजेंद्र सिंह • अरुण तिवारी

गंगा सेवा अभियान

गंगा निवेदन

जो देश अपनी संस्कृति, सभ्यता और इतिहास के स्मृति चिन्हों को याद नहीं रखता वह देश, संस्कृति व सभ्यतायें मिट जाती है। इसीलिए आज हम राष्ट्रीय महत्व की निष्प्राण स्मृतियों को राष्ट्रीय धरोहर घोषित कर.. सजों कर रखते हैं। ताजमहल, लालकिला, खजुराहो के मन्दिर....... कुछ ऐसी ही स्मृतियां है। लेकिन जो जीवित हैं....... राष्ट्रीय अस्मिता और पहचान के ऐसे जीवंत चिन्हों को हम राष्ट्रीय प्रतीक घोषित कर उनकी सुरक्षा, संरक्षा और संवृद्धन के प्रति संकल्पबद्ध होते हैं। राष्ट्रीय पक्षी– मोर, राष्ट्रीय पशु– बाघ और राष्ट्रीय पुष्प– कमल........ कुछ ऐसे ही जीवंत प्रतीक हैं। धरोहर और प्रतीक के इस अंतर को अच्छे से जानकर....... समझकर ही गंगा सेवा अभियान ने गंगा को राष्ट्रीय धरोहर कहने की बजाय, एक राष्ट्रीय नदी प्रतीक के रूप में संवैधानिक मान्यता व संरक्षण की मांग केन्द्र सरकार के सामने रखी है। आखिरकार गंगा के प्रवाह को हम निष्प्राण कैसे मान सकते है? भारत का समाज गंगा के नीर में नारी रूप के दर्शन करता है और इसे मां मानकर पूजता है। गंगा में भारतीय संस्कृति के प्राण बसते हैं। गंगा की दो बूंद हमारे संस्कारों का हिस्सा है। मृत्यु पूर्व दो बूंद गंगा जल पाने की लालसा अभी मरी नहीं है। यह मरे नहीं....... गंगा इसे जीवित रख सके। इसके लिए जरूरी है कि पहले गंगा खुद अमृतमयी बने। आज गंगा प्रदूषण, शोषण और अतिक्रमण की राक्षसी प्रवृतियों के कब्जे में हैं। गंगा की प्रदूषण नाशनी शक्ति कहीं लुप्त हो गई है। मां गंगा आज कोमा में है। गंगा..... भारत की स्वच्छ, सदानीरा, समृद्ध नदियों तथा संस्कृति का प्रतिनिधि प्रवाह है। आखिर! हम इसे कैसे मरने दे सकते हैं? जरूरी है कि गंगा का प्रवाह पुनः अमृतमयी बने। इसे राष्ट्रीय सम्मान मिले। गंगा के पुत्र....... गंगा के साथ राष्ट्र मां का सा व्यवहार करें। सभ्यतायें मर जाती हैं, मिट जाती हैं; लेकिन किसी राष्ट्र की संस्कृति का मर जाना....... मिट जाना एक राष्ट्रीय आघात से कम नहीं। क्या भारत इतने बड़े आघात के लिए तैयार है? यदि नहीं !.... तो गंगा को संविधान और अपने मानस में एक राष्ट्रीय नदी प्रतीक के रूप में सुरक्षित, संरक्षित तथा समृद्ध करना जरूरी है। आइए! इसके लिए हम सभी संकल्पबद्ध हों। आभार।

आपका राजेंद्र सिंह

संयोजक • गंगा सेवा अभियान

लेखक
राजेंद्र सिंह
अरुण तिवारी
विशिष्ट सहयोग
सत्येन्द्र सिंह
देवयानी कुलकर्णी, विनोद कुमार

गंगा क्यों

बने एक राष्ट्रीय नदी प्रतीक?

जल बिरादरी
गंगा सेवा अभियान

प्रथम संस्करण- गांधी जयंती 2008 सहयोग राशि-रुपये 60/-
प्रकाशक- राष्ट्रीय जल बिरादरी, 34/46, किरणपथ, मानसरोवर, जयपुर-302 020
फोन : 0141-2393178 ईमेल : watermantbs@yahoo.com, [redacted]ushtbs@gmail.com

गंगा सेवा अभियान

अनुक्रमणिका

1 • गंगा **क्यों** बने एक राष्ट्रीय नदी प्रतीक?

8 • क्योंकि गंगा सिर्फ एक नदी नहीं है।

13 • क्योंकि गंगा कोमा में है?

18 • क्योंकि गंगा की दुर्दशा के जिम्मेदार हम खुद हैं।

29 • क्योंकि गंगा को फिर चाहिए एक भागीरथ प्रयास।

37 • **ताकि** गंगा पुनर्जीवित हो सके।

गंगा सेवा और जल बिरादरी •

गंगा लोकादेश •

जो भूल गये, वे याद करें! •

अमृत मंथन •

गंग बने जब राष्ट्र प्रतीका
सुरसरि बन लागे पुनि नीका

गंगा क्यों
बने एक राष्ट्रीय नदी प्रतीक ?

जब पहली बार हमने हरिद्वार में गंगा के किनारे गंगा को एक राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में संवैधानिक मान्यता व संरक्षण की मांग की, तो एक नौजवान ने तुरन्त नकार दिया।

मैं अवाक रह गया। मुझसे कुछ उत्तर देते नहीं बना। उसने कहा – ''क्यों... गंगा में ऐसा क्या है ? अब तो इसका पानी नहाने लायक भी नहीं बचा। मुझे तो ऐसी नदी को राष्ट्रीय नदी कहने में भी शर्म आयेगी ?'' बाद में मैंने सोचा कि उसने ऐसा क्यों कहा? क्या वह गंगा को नहीं जानता ?

फिर मैंने यही सवाल दादा की एक पोती से पूछा। वह गंगा माई को उसके घर काम करने वाली महरी समझ बैठी। मैं सन्न हो गया। वह जिस गंगा को जानती है, वह सचमुच! महरी जैसी ही है......... बूढ़ी, बीमार, बेकार और लाचार!....... तो फिर वह उस गंगा के पास क्यों जाए? मैंने सोचा कि उसने क्या गलत कहा। यूं भी भारत में नदी को 'रिसोर्स' और जल को 'ब्रिकी की वस्तु' मानने वाले हमारी नदियों के प्रति एक महरी का सा ही नजरिया रखते हैं।

खैर! इस पीढ़ी के संवाद ने पिछले 35 वर्षो में पानी के काम का हमारा घमण्ड तोड़ दिया। उसने सच ही कहा। आज गंगा का यथार्थ यही है। शायद इसीलिए उस नन्ही सी बच्ची के एक 'क्यूं' ने मेरे मन में सैकड़ों 'क्यों' खड़े कर दिये। मेरे लिए यह जानना, समझना और समझाना जरूरी हो गया कि आज इस पीढ़ी के लिए गंगा ऐसी क्यों है और जिस पीढ़ी के लिए गंगा..... गंगा मां थी। तो वह... वैसी क्यों थी ?

उस नन्ही सी बच्ची के एक 'क्यूं' ने मेरे मन में सैकड़ों 'क्यों' खड़े कर दिये।

गंगा के ऐसे ही कई 'क्यों' मैं आपके सामने रख रहा हूं :

- गं अव्ययं गमयति इति गंगा..... अर्थात जो स्वर्ग को ले जाये, वह गंगा है। ऐसा **क्यों** कहा गया ?
- स्त्रोतसामस्मि जाह्नवी...... श्री कृष्ण ने कहा–नदियों में मैं गंगा हूं। **क्यों ?**
- आज भी मृत्यु के समय व्यक्ति के मुख में गंगाजल डालने का विधान मान्य बना हुआ है। **क्यों ?**
- अस्थियों को गंगा में प्रवाहित करने की लोकप्रथा है। **क्यों ?**
- कूटनीति और राजनीति के महान विशेषज्ञ चाणक्य ने कहा – 'जब संकट की घड़ी हो, तो गंगा की पूजा की जाये।' **क्यों ?**
- दुनिया में एक से एक सुन्दर, साफ और विशाल नदियां हैं। नील, वोल्गा, टेम्स और ओटावा......., लेकिन किसी के साथ भी दुनिया का इतना गहरा और आत्मीय रिश्ता नहीं है, जितना कि भारत की नदी गंगा के साथ। **क्यों ?**
- गंगा का पानी महीनों और सालों तक रखने के बाद भी एकदम ताजा, कीटाणुरहित और दुर्गंधमुक्त रहता है। इसे अमृत कहा जाता है...... यानी ऐसा जल जो कभी मृत न हो। **क्यों ?**
- क्यूं कहा गया कि गंगा के समान कोई तीर्थ नहीं ? गंगा के किनारे 350 करोड़ छोटे–बड़े तीर्थों की परिकल्पना है। **क्यों ?**
- जिन्होंने महाभारत जीता, उन पाण्डु पुत्रों को भी जब जीवन में निर्वाण बोध हुआ, तो उन्होंने भी गंगा मूल के हिमालय क्षेत्र में ही अपना भविष्य देखा। **क्यों ?**
- हिन्दू गंगा पर अपना दावा जताते हैं। गंगा को कुछ लोग सिर्फ हिन्दुओं की आस्था का केन्द्र मानते हैं। बावजूद इसके बादशाह अकबर ने गंगाजल को अमृत कहा।सुल्तान मुहम्मद तुगलक और औरंगजेब ने गंगा जल को अतिविशिष्ट माना तथा खास मानकर ही अपने इस्तेमाल में लिया। **क्यों ?**

● पूर्वी उत्तर प्रदेश के एक लोक गीत में **क्यों** कहा गया ?

अल्लाह मोरे अई हैं, मुहम्मद मोरे अई हैं। आगे गंगा थामली, जमुना हिलोरे लेयं।
बीचे मा खड़ी बीवी फातिमा, उम्मत बलैया लेय, ... दूल्हा बने रसूल।।

● 644 ई0 में प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसाँग ने सम्राट हर्षवर्धन से गंगा का कुंभ देखने का आग्रह किया। **क्यों** ?

● सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार के शुभारम्भ हेतु पाटलिपुत्र में गंगा और उसके रानी घाट को ही **क्यों** चुना ?

● सम्राट अशोक ने गंगा किनारे ही बोधिवृक्ष की शाखा अपनी पुत्री संघमित्रा को सौंपी और संघमित्रा को गंगा के प्रवाह मार्ग से ही ताम्रलिप्ति नामक बंगाल की एक जगह से होते हुए श्रीलंका के लिए भेजा। **क्यों** ?

● महात्मा बुद्ध ने भविष्यवाणी की थी कि गंगा का किनारा पाटलिपुत्र एक दिन आर्य भारत के व्यापार और आर्थिक कार्य-कलाप का प्रमुख केन्द्र बनेगा। यही पाटलिपुत्र एक दिन बौद्ध और जैन धर्मों के विकास का भी केन्द्र बना। **क्यों** ?

● वाल्मीकि और तुलसीदास यमुना की गोदी में जन्मे; फिर भी क्रमशः रामायण और रामचरित मानस की रचना गंगा की गोदी में ही बैठकर **क्यों** की ? बिठूर में गंगा की सहायक तमसा और गंगा के मध्य स्थान पर वाल्मीकि आश्रम में रामायण लिखा गया और बनारस के अस्सी घाट पर रामचरितमानस।

● महर्षि व्यास ने गंगा किनारे हिमालय के शांत वनों में बैठकर ही पुराणों की रचना की। आदिगुरु शंकराचार्य ने गंगा किनारे ही 'गंगाष्टक' रचा। रामानुज, वल्लभाचार्य, रामानन्द, चैतन्य महाप्रभु..... सभी ने गंगा की महिमा के गीत गाये। **क्यों** ?

● संत कबीर के लहरतारा गांव को भला कौन भूल सकता है! कबीर जन्मे भी गंगा के किनारे और कबीरा की तान भी यहीं से पूरी दुनिया में गूंजी। संत रैदास ने तो गंगा किनारे बैठकर ही कहा - 'मन चंगा, तो कठौती में गंगा।' **क्यों** ?

● जगन्नाथ की 'गंगालहरी' यहीं अमर हुई। 15वीं शताब्दी में दक्षिण भारत के विद्वान कुमार गुरुपाद ने शैव सिद्धान्त की रचना इसी गंगा के केदार घाट पर बैठकर ही **क्यों** की ?

● कर्नाटक संगीत के स्थापना पुरुष मुत्तुस्वामी दीक्षित ने 'राग झंझूती' की रचना के लिए इसी गंगा का तट **क्यों** चुना ?

● इसी गंगा के तट पर कभी मगध के महामंत्री कौटिल्य ने अर्थशास्त्र लिखा और चाणक्य की कूटनीति ने ख्याति पाई। सोचिए! कि महाकवि कालिदास की कोई रचना गंगा और हिमालय के बिना पूरी **क्यों** नहीं होती ?

● महान साहित्यकार प्रेमचन्द्र की सर्वश्रेष्ठ रचनायें उनके गंगा प्रवास के दौरान ही जन्मीं। **क्यों ?**

● आर्यसमाज के प्रणेता महर्षि दयानन्द ने अपने चिन्तन प्रवास का मुख्य स्थान नरोरा में गंगा के राजघाट को ही **क्यों** चुना ?

● गंगा का बनारस बहुत प्राचीन शहर है। छोटी–छोटी संकरी गलियों, टूटी–फूटी पुरानी इमारतों और अव्यवस्थित बसावट वाली नगरी होने के बावजूद चाहे कोई धर्म हो, कोई बड़ा आन्दोलन या कोई बड़ा आध्यात्मिक पुरुष..... सभी का वाराणसी आना उनके जीवन में निर्णायक साबित हुआ। **क्यों ?** गुरु गौड़पाद के कहने पर शंकराचार्य भी वाराणसी आये। यहीं उन्होंने एक चांडाल में महेश्वर का रूप देखा और 'मनीषा पंचगम' के पांच श्लोकों में पूरा जीवन सार कह दिया।

आध्यात्मिक और शैक्षिक शक्ति का केन्द्र आज भी गंगा किनारे बसे नगर इलाहाबाद और वाराणसी ही क्यों हैं ?

● सोचिए! कि उ. प्र. की राजधानी लखनऊ जरूर है, लेकिन उसकी आध्यात्मिक और शैक्षिक शक्ति का केन्द्र आज भी गंगा किनारे बसे नगर इलाहाबाद और वाराणसी ही **क्यों** हैं ?

● पटना साहिब आज भी गंगा और सिक्ख गुरुओं के रिश्तों का खास गवाह **क्यों** माना जाता है ?

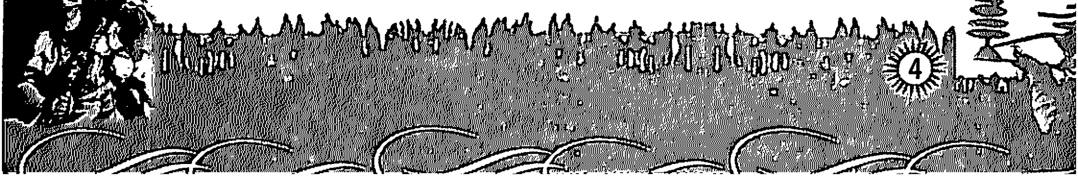

● भगवान बुद्ध और महावीर जैसे महान ज्ञानी युगपुरुषों को भी विद्या लाभ के लिए गंगा किनारे वाराणसी **क्यों** आना पड़ा ?

● आचार्य वाग्भट्ट ने गंगा के किनारे एक हकीम से आयुर्विज्ञान की शिक्षा पाई और 12 शाखाओं का विकास किया। प्रसिद्ध बांग्ला रचनाकार गुरु रवीन्द्र नाथ टैगोर ताउम्र बंगाल में रहे, लेकिन उनकी रचनायें भी बनारस की गलियों से अछूती नहीं रहीं। **क्यों ?**

● **गंगा** किनारे के चार विश्वविद्यालय..... तक्षशिला, नालन्दा, काशी और इलाहाबाद को जितनी ख्याति अर्जित हुई, अपवाद छोड़ दें तो उसका दशांश भी किसी और भारतीय विश्वविद्यालय को आज तक हासिल **क्यों** नहीं हुआ ? प्रयाग में आनन्द भवन के सामने आज भी वाल्मीकि शिष्य भारद्वाज के आश्रम के अवशेष हैं, जो कभी एक बड़ा विश्वविद्यालय था।

● गंगा तो सिर्फ उत्तर भारत की जीवनदायिनी धारा है, फिर मद्रास के दक्षिण में महाबलीपुरम के मूर्तिकारों ने अपनी कल्पना को साकार करने के लिए गंगा को एक मूर्तिरूप देने की इतनी ललक **क्यों** महसूस की ?

● **पं. नेहरू** ने कभी गंगा स्नान कर पुण्य कमाने की लालसा नहीं की। मृत शरीर की अस्थियां गंगा में प्रवाहित करने का उनके लिए कोई धार्मिक महत्व नहीं था। वह निरीश्वरवादी थे। बावजूद इसके उन्होंने अपनी वसीयत में अपनी अस्थियों को गंगा में प्रवाहित करने की बात **क्यों** लिखी ?

● पं. नेहरू ने चिट्ठी चाहे एडवर्ड थॉमसन को लिखी हो या नैनी जेल से बेटी इंदिरा को, वह गंगा के बारे में लिखना नहीं भूले। **क्यों?**

● आजादी के बाद भारत विभाजन का कष्ट समेटने महात्मा गांधी हुगली के नामकरण वाली गंगा के सागर संगम क्षेत्र पर स्थित नोआखाली में ही **क्यों** गये ?

● गौ, गीता और गायत्री के अतिरिक्त जिस चौथे आधार को मानव मुक्ति का द्वार माना गया, वह एकमात्र गंगा ही है। **क्यों ?**

● सिर्फ गंगा के किनारे ही हर बरस माघ मेला जोड़ने की परम्परा बनी। **क्यों ?**

● ख्यातिनाम शहनाई वादक स्व. उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ ने **क्यों** कहा था?–''गंगा और संगीत एक–दूसरे के पूरक हैं।''

● यदि कभी हरिद्वार ही स्वर्ग का द्वार था और हिमालय क्षेत्र....... उत्तराखण्ड की ही स्वर्ग के रूप में ख्याति थी, तो और भी कई नदियां इसी उत्तराखण्ड से उतर–उतरकर भरतखण्ड में प्रवाहित होती हैं। फिर गंगा को ही सुरसरि.... **क्यों** कहा गया?

● गंगा के साथ ही आकाश से उतारकर सगर पुत्रों को पुनर्जीवित करने के भगीरथ प्रयास का किस्सा **क्यों** जुड़ा? **क्यों** नहीं और हिम नदियों को स्वर्ग से उतारकर धरती पर लाने के किस्सों को ख्याति मिली? क्या शेष स्वर्ग धारायें बिना प्रयास ही पृथ्वी पर उतर आईं ?

● **क्यों** नहीं कोई और धारा सभी युगों में इतनी पूज्य और महिमायुक्त हुई ? **क्यों** नहीं किसी और नदी को भारतीय संस्कृति का आधार माना गया ? **क्यों** नहीं किसी और नदी का जल अक्षुण्ण है ? **क्यों** नहीं कोई और भारतीय नदी दुनिया में भारत की राष्ट्रीय अस्मिता की पहचान मानी गई?

● **क्यों** नहीं किसी और एक नदी के तट पर भारतीय धर्म, साहित्य, रचना, ज्ञान और पुरुषार्थ का ऐसा समग्र इतिहास मिलता?

मूल प्रश्न तो यही है कि आखिर इतना जोर देकर क्यों कहा जाता है कि गंगा तो गंगा है ? आखिर कोई क्यों कहता है कि दुनिया में बहुत सी नदियां हैं, लेकिन गंगा जैसी कोई नहीं ?.....आखिर क्यों ?

मां गंगा के पक्ष में खड़े इतने सारे 'क्यों' के बावजूद क्या यह तर्क देने की आवश्यकता शेष है कि गंगा एक राष्ट्रीय नदी प्रतीक के रूप में क्यों मान्य हो? यदि हां!.. तो गंगा को लेकर हर 'क्यों' का एक ही जवाब है:

...क्योंकि गंगा सिर्फ एक नदी नहीं है।

एवरेस्ट को जीतने वाले सर एडमंड हिलेरी की मोटरबोट जब लाख कोशिशों के बावजूद अलकनंदा की धारा में नंदप्रयाग से आगे नहीं बढ़ पाई, तो उन्होंने यही कहा था।

(सागर से आकाश अभियान – 28 नवम्बर, 1977)

..क्योंकि गंगा सिर्फ एक नदी नहीं है।

सचमुच! गंगा सिर्फ नदी नहीं है। यदि गंगा सिर्फ एक नदी होती, तो इसके साथ इतने सारे 'क्यों' न जुड़े होते।

अब आपको हक है। अब आप पूछ सकते हैं कि यदि गंगा एक नदी नहीं है.... तो क्या है ?

'गंगा' भारतीय संस्कृति की महाधारा है। दुनिया में जितनी भी नदियां हैं; उनके किनारे सभ्यतायें जन्मीं, लेकिन गंगा के किनारे तो एक भरी–पूरी संस्कृति ने जन्म लिया। हजारों बरस बाद गंगा के किनारे आज भी भारतीय संस्कृति का केन्द्र बने हुए हैं और गंगा–नदियों के प्रति भारतीय आस्था की एक राष्ट्रीय प्रतीक!

आदिगुरु शंकराचार्य ने कहा कि उन्हें गंगा की मछली, गंगा का कछुआ, गंगा किनारे का एक गरीब इंसान..... अर्थात कुछ भी बनकर रहना मंजूर है। यह उनकी इच्छा भी थी और स्वीकृति भी........ लेकिन उन्हें गंगा से दूर रहकर तो राजा बनना भी मंजूर नहीं था।

........लेकिन उन्हें गंगा से दूर रहकर तो राजा बनना भी मंजूर नहीं था।

एक महापुरूष के इन संकल्प वाक्यों को पढ़कर आप समझ सकते हैं कि गंगा क्या है? जल विशेषज्ञ डा. एफ. कोहिमान, विख्यात फ्रांसीसी डा. डी. हरेल, प्रसिद्ध अमेरिकी लेखक मार्केट वेवने, बर्लिन के डा. जे. पॉलीवर, भारत के डा. के.एल. राव तथा हमारे वैद्यक शास्त्र और इंटरनेशनल मेडिकल जनरल के ख्यातिनाम वैज्ञानिकों ने गंगाजल पर महत्वपूर्ण शोध किये और सभी ने पाया कि गंगाजल में दूसरी नदियों के पानी की तुलना में बैक्टिरियोफेंज (जीवाणुभक्ष) की मात्रा अधिक होती है। यूनेस्को के वैज्ञानिक दल

ने हरिद्वार के निकट उस स्थान से गंगाजल का नमूना लिया, जहां मुर्दे व हड्डियाँ आदि दूषित वस्तुएँ थीं। उन्हें ताज्जुब हुआ कि उससे कुछ फीट नीचे का नमूना पूरी तरह शुद्ध पाया गया। मैक्गिल यूनिवर्सिटी के एक प्रोफेसर ने 30 साल पहले अपने प्रयोग से सिद्ध किया था कि हैजे के कीटाणु गंगाजल के सम्पर्क में आते ही तीन से चार घंटे में मर जाते हैं। ब्रिटिश पत्रिका 'गुडहैल्थ' ने लिखा कि दुनिया की सबसे साफ नदियों में शुमार टेम्स नदी का रखा हुआ जल कुछ समय बाद दूषित हो गया, जबकि गंगाजल पूरी तरह ताजा मिला। यही गंगा है। गंगा के गंगा होने में सिर्फ इसका अक्षुण्ण जल ही नहीं, और भी कई महत्वपूर्ण कारण हैं, जिन्होंने गंगाजल को अक्षुण्ण और गंगा को गंगा बनाए रखा।

> **दुनिया की सबसे साफ नदियों में शुमार टेम्स नदी का रखा हुआ जल कुछ समय बाद दूषित हो गया, जबकि गंगाजल पूरी तरह ताजा मिला। यह गंगा है।**

यह पानी को अमृततुल्य बनाये रखने का गंगा सिद्धान्त ही है कि किसी भी नदी अथवा नदी का छोटे से छोटा हिस्सा भी किसी एक जाति, धर्म, समुदाय अथवा व्यक्ति का निजी नहीं हो सकता। गंगा भी किसी एक की नहीं है;...... यह भी सभी की है... पूरी दुनिया की। गंगा के किनारे जुटने वाले कुंभ में सभी का स्वागत होता है। गंगा किनारे न कोई हिन्दू होता है, न मुसलमां, न सिक्ख, न ईसाई...... न अमीर, न गरीब, न राजा, न प्रजा..... यहां तो सभी गंगा के बेटे होते हैं! गंगा के प्रति श्रद्धा के पुष्प चढ़ाने आये श्रद्धालु!...... भक्त !!

गंगा को सभी स्वीकार्य हैं और मां के रूप में गंगा भी सभी को स्वीकार्य है। इसीलिए गंगा सभी की है....... हिमालय के ग्लेशियरों की भी, गंगोत्री में भोजपत्र के जंगलों की भी, बद्रीनाथ में आदिगुरु

आइए! याद करें

हमें याद करना होगा कि गंगा की शुद्धि और अमरत्व का भारतीय व्यवहार क्या था? प्रकृति के साथ लेन-देन के अपने रिश्ते को बनाकर रखने के लिए भारत क्या करता था ? भारत का समाज अपने पानी को कैसे देखता था ? पृथ्वी , अग्नि, जल, वायु और आकाश को पंचमहाभूत के रूप में क्यों पूजा गया ? प्रकृति में चूहे से लेकर कुत्ता, गाय, अश्व, नन्दी, भैंसा, गधा, वराह (सुअर), मछली, कछुआ, मगरमच्छ, मोर, हंस, गरुड़, हिरण, हाथी, और सिंह जैसे जीवों को भी किसी न किसी दैवीय शक्ति अथवा उसके वाहन रूप में क्यों पूजा जाता है ? भारत का समाज धरती, तुलसी, और नदियों को माता के रूप में क्यों देखता है ? पीपल, बरगद, आम, केला, आंवला, खेजड़ी से लेकर नीम तक को क्यों पूज्य माना गया ? हरी दूब, कुश, आम्र पल्लव, समिधा, बेलपत्र, पान, सुपारी, लौंग, नारियल और नाना प्रकार के पुष्प दल से लेकर रोली, चन्दन तक क्यों हमारे कर्मकाण्ड की आवश्यक पूजा सामग्रियों में शामिल किये गये? सूर्य, चन्द्र, वरुण, अग्नि, इन्द्र की एक देव के रूप में परिकल्पना क्यों की गई ? भारतीय दर्शन और सनातन धर्म जब एक पत्थर में शिव की परिकल्पना करता है, तो उसका 'शिव' क्या है ? उसके 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' में क्या रहस्य छिपा है ? कण-कण में भगवान के वास की आस्था का विज्ञान क्या है ? यह समझे बगैर गंगा को समझना जरा मुश्किल है।

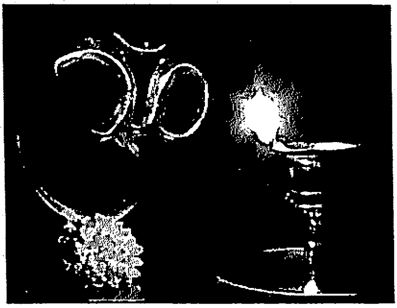

शंकराचार्य की भी और हरिद्वार में हरि के द्वार की भी। गंगा कन्नौज में सम्राट् हर्षवर्धन की भी थी, तो इलाहाबाद में अकबर के दीन–ए–इलाही की भी। गंगा वाराणसी में कबीर की भी रही, तो रैदास की भी, तुलसी की भी और पटना में पटनासाहिब, मगध में चन्द्रगुप्त की भी। गंगा सुन्दरबन में सिंह की दहाड़ की भी है और 'आमार सोनार बांग्ला देस' के समंदर की भी।

यह सोचना ही कितना अद्भुत है कि गंगा सिर्फ किसी एक लोक की नहीं है! यह स्वर्गलोक की भी है, द्यूलोक और भूलोक की भी!! युग बदले। कालखण्ड ने कई उतार–चढ़ाव देखे। कितने राज आए–गए। प्रकृति ने भी कई चोले बदले। गंगा ने भी अपने कई पाट बदले।... लेकिन गंगा के प्रति आस्था नहीं बदली। गंगा का मिथक लम्बे समय तक कायम रहा। क्यों ?..... क्योंकि गंगा सचमुच कोई साधारण नदी नहीं....... गंगा भारतीय जन के मानस में बहता एक असाधारण प्रवाह है। इसीलिए कि गंगा.. गंगा है।

यह सोचना ही कितना अदभुत है कि गंगा सिर्फ किसी एक लोक की नहीं है! यह स्वर्गलोक की भी है, द्यूलोक और भूलोक की भी!!

गंगा इसलिए भी गंगा है, क्योंकि गंगा एक नहीं, बल्कि करोड़ों वर्षो के भूवैज्ञानिक इतिहास का परिणाम है। गंगा को हजारों फीट ऊपर आसीन स्वच्छ मीठे पानी के ग्लेशियर प्राण देते हैं। गंगा मैदान का 5 लाख वर्ग किलोमीटर का क्षेत्रफल बड़े कटाव से मुक्त है। गंगा का 64 हजार वर्ग किलोमीटर फैला डेल्टा प्राग–ऐतिहासिक युग का है। गंगा के शिवालिक क्षेत्र की एक स्पष्ट संरचनात्मक विशेषता है।

गंगा इसलिए भी गंगा है, क्योंकि इसके मूल में वृक्ष और अन्य वनस्पति रूप में फैली शिव की जटायें इसे समृद्ध करती हैं। शिव जटा की परिकल्पना कुछ और नहीं, बल्कि गिरती गंगा को थाम लेने वाली कोटि–कोटि वृक्ष–वनस्पतियां ही हैं। इसलिए गंगा मूल

का हर पत्थर शिव ही है और गंगा पूरी दुनिया में शिवलिंग पर इसी रूप में अर्पित की जाती है।

गंगा मूल में दुनिया का अद्वितीय वानस्पतिक संघटन है। इसकी ऊंचाई के ढलानों पर ऐसा अदभुत पारिस्थितिकीय तंत्र विकसित हुआ है, जिसमें दुनिया के लगभग सभी पादप और भौगोलिक तत्वों का समावेश है। गंगा के प्रवाह में सिप्रीनिड समूह के अनूठे जीव–जन्तु भी है।...... हजार–दो हजार नहीं, बल्कि जीव–जन्तुओं की जाति–प्रजाति की दृष्टि से भी गंगा का प्रवाह निःसंदेह दुनिया में सबसे समृद्ध प्रवाहों में से एक है। गंगा को सूर्य की रोशनी भी समृद्ध करती है, तो उत्तराखण्ड की हवायें भी, वनस्पति भी और उत्तराखण्ड से लेकर भरतखण्ड तक भूमि का स्पर्श भी। इसलिए गंगा ब्रह्मपुत्री भी है, सूर्यपुत्री भी और हिमपुत्री भी।

अब आप समझ सकते हैं कि महात्मा गांधी गंगा पहुंचकर मुंह धोते वक्त एक लोटा पानी बिखर जाने से क्यों चिन्तित हुए। जब पं. नेहरू ने उन्हें आश्वस्त करने की कोशिश की – 'यहां तो गंगा बहती है। यहां एक लोटे पानी की चिन्ता क्यूं ?' इस पर गांधी ने कहा कि गंगा अकेले नेहरू या गांधी की नहीं, गंगा के दोनों किनारो पर बसे 30 करोड़ो लोगों की है। क्यों?

दरअसल यह सोच का प्रश्न है..

एक लोटे पानी का नहीं ? इसी सोच ने गंगा को गंगा बनाए रखा। गंगा इसीलिए सिर्फ एक नदी नहीं कुछ और बनी रही, क्योंकि गंगा के किनारे ऐसी सोच बसती थी।

क्योंकि गंगा
कोमा में है?

शक नहीं कि गंगा कोई साधारण नदी नहीं, यह भारतीय संस्कृति की एक असाधारण महाधारा है। गंगा हिमालय की देवभूमि से लेकर गंगासागर तक आस्था और विश्वास की एक ऐसी धारा है, जिसके बारे में यह सोचना भी सम्भव नहीं कि गंगा कभी मर भी सकती है। गंगा के साथ लोगों के जन्म से लेकर मृत्यु तक के संस्कार जुड़े हैं। इतना ही नहीं, गंगा दुनिया में भारत की अस्मिता की पहचान भी है। सदियों से आयोजित होने वाले कुंभ – महाकुंभ...... माघ मेले हर बरस इस अस्मिता की याद दिला देते हैं। जहां गंगा नहीं, वहां लाखों कांवड़ियों के कन्धों पर सवार होकर हर बरस गंगा पहुंचती है और शिवलिंग पर अर्पित होकर सत्यम, शिवम्, सुन्दरम् के अपने जयघोष को उच्चारित करना नहीं भूलती।

ऐसी गंगा के मिट जाने की कल्पना मात्र से हृदय कांप उठता है।..... लेकिन सच तो यही है, जो एक दादा की पोती ने कहा।

आज दुनिया में जिन बड़ी 10 नदियों का अस्तित्व खतरे में बताया गया, उनमें गंगा एक प्रमुख नदी है। डब्ल्यू.डब्ल्यू. एफ. रिपोर्ट – 2007 की यह चेतावनी अकारण नहीं है।

गंगाजल की जैविक आक्सीजन मांग (बी.ओ.डी.) तीन डिग्री के सामान्य स्तर से बढ़कर दोगुना छः डिग्री हो चुकी है। गंगाजल पीने से ही नहीं, अब नहाने से भी सेहत को खतरा पैदा हो गया है।

अंधाधुंध कचरा डालने के बाद गंगा कब तक अमृतमयी बनी रह सकती है ? एक न एक दिन तो इसे मैला ढोने वाली मालगाड़ी में तब्दील होना ही है.... हो रही है। गंगा अब न अमृतमयी है!... न तारनहार!! अब तो गंगा बीमारी देने और प्राण लेने वाली बन गई है।

गंगाजल का प्रदूषण स्तर 'गंगा कार्य योजना' शुरू होने से पहले जैसा था, आज हजार करोड़ रुपये से ज्यादा खर्च होने के बावजूद वह प्रदूषण कम होने की बजाय बढ़ा है।

एक तरफ गंगा जल की मात्रा खो रही है, प्रदूषण बढ़ रहा है। दूसरी तरफ गंगा प्रवाह के मार्ग में कई अवरोधक खड़े हैं। गंगा की स्वयं जलशोधन क्षमता पर पहले ही संकट है।.... अंधाधुंध कचरा डालने के बाद गंगा कब तक अमृतमयी बनी रह सकती है ? एक न एक दिन तो इसे मैला ढोने वाली मालगाड़ी में तब्दील होना ही है।.... हो रही है।

यह मुगालता लिए हुए आखिर अब हम कब तक गंगा को उपेक्षित छोड़ सकते हैं कि गंगा अमृतधारा है.... यह तो पापियों के पाप धोती है.... यह कभी नष्ट नहीं हो सकती। यदि हम गंगा पर गंगा की संतानों के कहर की ही दास्तानों पर गौर करें, तो ही इस सच को नहीं झुठला सकते कि गंगा के अमृतमयी होने के मिथक अब टूट गया है। गंगा अब न अमृतमयी है!... न तारनहार!! अब तो गंगा बीमारी देने और प्राण लेने वाली बन गई है।

एक अंतर्राष्ट्रीय रिपोर्ट के मुताबिक उत्तर प्रदेश की बारह प्रतिशत बीमारियों की वजह गंगा का प्रदूषित जल है। श्रीनगर गढ़वाल विश्वविद्यालय के प्रो.प्रकाश नौटियाल की 15 वर्ष पुरानी शोध रिपोर्ट झूठी नहीं कि उत्तरकाशी से श्रीनगर गढ़वाल तक के गंगा प्रवाह में कॉलीफार्म की मात्रा इतनी अधिक बढ़ गई है कि अब आस-पास की आबादी गंगा से जीवन नहीं, बल्कि पेट की बीमारियां लेकर आती है। जो गंगा कभी दूसरों को जीवन देती थी, वह आज जीवन लेने वाली बन गई है। जिसे युगों-युगों तक अमृतधारा कहा गया, वह खुद आज एक मृतधारा हो गई है।

ध्यान रहे कि गंगा को मृतधारा कहना किसी कवि की अतिश्योक्ति पूर्ण परिकल्पना नहीं है। जब कभी किसी नदी का मूल प्रवाह सूखने लगे, तो वह धारा मृत हो जाती है। उसका जल इतना विषैला हो जाये कि उसके भीतर और समीप रहने वाले जीव, जन्तु, पौधे..... यानी वानस्पतिक और जैविक विविधता नष्ट होने लगे, तो समझ लेना चाहिए कि नदी अब मर रही है। एक मरती नदी की तीसरी पहचान यह है कि जब नदी के तट और जल को इतना गंदा कर दिया जाये कि वहां जीवन-मृत्यु संस्कारों के कर्मकाण्ड में रुकावट पैदा होने लगे; नदी का गंदला जल देखकर स्नान की इच्छा मर जाये.. नदी का जल आचमन करने योग्य भी न रहे, तो वह नदी एक तरह से मरी हुई ही होती है। क्या गंगा भी अब सचमुच! मरी हुई ही नहीं है? आप यह सवाल खुद से पूछ सकते हैं कि क्या गंगा का जल अब

जब किसी नदी के तट और जल को इतना गंदा कर दिया जाये कि वहां जीवन-मृत्यु संस्कारों के कर्मकाण्ड में रुकावट पैदा होने लगे; नदी का गंदला जल देखकर स्नान की इच्छा मर जाये...... नदी का जल आचमन करने योग्य भी न रहे, तो वह नदी एक तरह से मरी हुई ही होती है।

सचमुच आचमन करने योग्य बचा है ? गंगा किनारे के घाटों और तटों पर जैसी गंदगी दिखाई देती है.. गंगाजल का रंग कहीं–कहीं जितना काला और गंदला होकर बहता है..... क्या आप सचमुच! हृदय से इस जल का आचमन कर सकते हैं? नहीं।.... एन.टी.पी.सी. और पटेल आदि कंपनियों ने ऊर्जा उत्पादन के नाम पर गंगा को सुरंगों–बांधों में कैद कर गंगा का प्रवाह रोका है... इसे प्रदूषित किया है। इसी का नतीजा है कि अब गंगा का जल बंगाल, बनारस और कानपुर में तो क्या, ऋषिकेश और हरिद्वार में भी पीने योग्य नहीं रहा। क्या वहां भी हम बमुश्किल एक डुबकी मारकर गंगा स्नान की औपचारिकता भर पूरी नहीं कर लेते ?

इससे अधिक गंगा की दुर्दशा और क्या होगी कि गंगा मूल में भी गंगा किनारे की आबादी गंगाजल की बजाय उससे दूर लगे हैंडपम्प का पानी पीना ज्यादा पसन्द करती है!

सोचिए !

क्या यही हमारी गंगा है ?

क्या हमारे ऋषि–मुनियों ने ऐसी ही गंगा को अपनी आस्था का केन्द्र बनाया था ?

क्या उन्होंने हमें ऐसी ही गंगा सौंपी थी ?

क्या ऐसे ही जल वाली नदी को हम 'गंगा' कहते हैं ? जिस नदी का जल मर गया हो, क्या उसकी संतानों को उस नदी को अपनी मां कहने का हक बचता है ?

नहीं!.... बिल्कुल नहीं!!

हम झूठ बोलते हैं। हमने गंगा को कभी हृदय से अपनी मां माना ही नहीं। सोचिए! क्यों ?

मैं सोचता हूं कि यदि **गंगा** के पक्ष में खड़े 'क्यों' इतने ही मजबूत हैं। 'गंगा..... गंगा है क्योंकि' के तर्क इतने ही प्रमाणिक हैं, तो फिर गंगा इतनी हीन-मलीन और मृत कैसे हो गई? भारत में नदियों के प्रति जैसी श्रद्धा और 'मां' जैसा सम्बोधन दुनिया की दूसरी नदियों को नहीं मिला, लेकिन क्या बात है कि आज भी भारत की नदियां भारत के लिए राष्ट्रीय बेचैनी का विषय नहीं बन सकी हैं ? जबकि टैम्स, राई और डेन्यूब जैसी घोर प्रदूषण वाली तीन प्रमुख यूरोपीय नदियां कभी यूरोप में राष्ट्रीय स्तर पर चिंता का विषय बनीं। सरकारों ने पहल की और आज ये तीनों ही यूरोप की स्वच्छ नदियां हैं। आखिरकार नदियों के प्रति उपेक्षा और उदासीनता के वर्तमान भारतीय चित्र के लिए **जिम्मेदार कौन** है?... क्या हम खुद?

क्योंकि गंगा की दुर्दशा
के जिम्मेदार हम खुद हैं।

आपको हक है। आप पूछ सकते हैं कि इतनी बड़ी आस्था वाले भारत देश में जहां आज भी गंगा के किनारे माघ का मेला लगता है!...... करोड़ों दीपदान होते हैं!..... कोटि-कोटि हाथ एक नहीं, कई-कई बार गंगा के सामने जुड़ जाते हैं, लेकिन यही कोटि-कोटि हाथ गंगा पुनरुद्धार के लिए एक साथ क्यों नहीं जुटते ? गरीब से गरीब आदमी भी अपनी कमाई का पैसा खर्च करके गंगा दर्शन के लिए आता है, लेकिन वह गंगा दर्शन के सिद्धान्त को कभी याद नहीं करता। क्यों ? गंगा दर्शन को समझने और समझाने के लिए वह अब एक साथ क्यों नहीं बैठता ?

अजीब बात है कि गंगा को लेकर किसी धर्म, किसी सम्प्रदाय, जाति या वर्ग में कोई भेद नहीं है। गंगा को सभी मां मानते हैं। नेता, अफसर, भ्रष्ट और सज्जन..... सभी इसके आगे माथा टेकते हैं। बावजूद इसके किसी के मन में यह संकल्प क्यों नहीं जागता.... यह सवाल क्यों नहीं उठता कि यदि गंगा ही नहीं रहेगी, तो माघ का मेला कहां लगेगा और आप माथा कहां टेकेंगे ?

हमें यह समझ में क्यों नहीं आता कि अब गंगा का जल हमारे पाप धोने के लायक नहीं रहा...... क्योंकि हमारे ही पापकृत्यों ने गंगाजल को इतना मैला और निर्धन बना दिया है कि अब वह खुद हमसे अपने पुनर्जीवन की भीख मांग रहा है। ऐसा क्यों हुआ ? गंगा की हत्या का जिम्मेदार कौन है ?..... राजा–प्रजा–ऋषि–संत...... या हम सभी ? **चूक कहां हुई ?**

ताज्जुब नहीं, लेकिन इस बात का अफसोस जाहिर करना जरूरी है कि जो समाज दूसरों को पानी पिलाकर...... नव सम्वत्, गंगा दशहरा, बसंतपंचमी, गुरुपर्व और मोहर्रम पर शरबत पिलाकर स्वयं को धन्य मानता था..... सन्तुष्ट होता था, वही समाज आज पानी की खरीद–ब्रिकी में भी लगा है। वह बोतलों में पानी भरकर बेचता भी है और खरीदता भी। प्यासों को पानी पिलाने का धर्मार्थ त्यागकर वह पानी से मुनाफे कमाने के उपक्रम में जुट गया है।

जो समाज कभी अपनी नदियों को समृद्ध और संरक्षित रखने के लिए नदी किनारे बैठता था, माघ मेला, छठपूजा, कांवड़ यात्रा, बसंतपंचमी, कार्तिक पूर्णिमा स्नान...... किसी न किसी बहाने नदी के साथ अपने रिश्ते को याद रखता था... हमारा समाज छः वर्ष में अर्धकुंभ, 12 वर्ष में कुंभ और 144 वर्ष में महाकुंभ की छाया तले बैठकर अपनी नदियों के साथ समाज, सरकार और ऋषि...... सभी के व्यवहार की नीति–रीति और कार्यक्रम तय करता था। इसी के कारण हमारी नदियां समृद्ध रहीं...... गंगा....गंगा रही; लेकिन ऐसे आदर्शों, आयोजनों..... उनके मूल अभिप्राय और लक्ष्य को भारत का समाज भूल गया है ।

कुंभ... अभिप्राय भूल गया और समाज... व्यवहार। गंगा इसीलिए बेबस हुई।

गंगा इसीलिए बेबस हुई।

(कुंभ क्या है ? यह जानने के लिए आप जलबिरादरी द्वारा प्रकाशित और श्री राजेन्द्र सिंह द्वारा रचित पुस्तक 'सिर्फ स्नान नहीं कुंभ' का लाभ ले सकते हैं।)

नतीजा?.. आज भारत में पानी का परिदृश्य सचमुच बहुत भयावह है। नदियां नष्ट हो रही हैं। प्रदूषण चरम पर है। पानी को लेकर विचार और व्यवहार सब कुछ लुटता–बिगड़ता दिखाई दे रहा है। हमारी सरकारों और बाजारों ने हमारी नदियों को कमाई का साधन मान लिया है और पानी को व्यापार की वस्तु। जल चाहे गंगा सतह का हो, चाहे मेहन्दीगंज, प्लाचीमाड़ा और कालाडेरा की धरती का!...... दुनिया की कुछ गिद्द निगाहें पूरे भारत के पानी पर लगी हैं। ये किसी न किसी बहाने हमारे प्राकृतिक संसाधनों पर कब्जा करना चाहती हैं। हमने भी इनके साथ मिलकर भारत के 70 प्रतिशत भूजल भंडारों को खतरे के काले निशान पर पहुंचा दिया है।

हा!

हम भारतीय तो आज अपनी एक भी प्रमुख नदी की शुद्धता का दावा करने योग्य नहीं रहे। कहीं भूजल का शोषण, कहीं औद्योगिक कचरा... नगरीय मल का प्रदूषण और कहीं ऊर्जा और सिंचाई के नाम पर हमारी नदियों को लूटा जा रहा है।

आज भारत की एक भी प्रमुख नदी ऐसी नहीं, जो कि गुणवत्ता और मात्रा के शुद्ध पारिस्थितिकीय पैमाने पर पूरी तरह खरी हो। यह सब ऊर्जा, सिंचाई और तथाकथित विकास के नाम पर हो रहा है।

1986 में गंगा कार्य योजना शुरू होने से पहले हमारे यहां 'सॉकेट पिट' यानी ज्यादातर घरों में शौचालय के मल को एक टैंक में रखने की प्रणाली थी। इस मल को खाद में बदलने की व्यवस्था देशभर में थी, जिसे सीवर फार्म कहते हैं। 1986 के बाद सीवर फार्म की जगह सीवेज प्रणाली व मल शोधन संयंत्र आगे आ गए। सीवेज को पाइपों में बंद कर मल शोधन संयंत्रों तक और फिर नदी–नालों में बहाया जाने लगा। लेकिन सचाई यह है कि हमारे ज्यादातर मल शोधन संयंत्र (एस.टी.पी.) अपनी पूरी क्षमता अथवा जरूरत मुताबिक मल शोधन करने में पूरे

वर्ष सक्षम नहीं दिखाई देते। गंगा में मल प्रदूषण की एक बड़ी जिम्मेदार यह अक्षमता भी है। ज्यादातर मल शोधन संयंत्र कभी बिजली नहीं होने और कभी दूसरे कारणों से बिना शोधित किये ही मल को आगे प्रवाहित करते रहते हैं। प्रदूषण का कौन सा प्रकार सबसे अधिक खतरनाक है? यह एक अलग विषय है, लेकिन मात्रा की दृष्टि से गोमुख से गंगासागर तक 20 से 25 किमी. की लम्बाई में प्रदूषण का करीब 80 प्रतिशत 91 नगरों का सीवेज यानी मल प्रवाह ही है। इसे सरल–सहज तरीके से शुद्ध किया जा सकता है, लेकिन एस.टी.पी. मशीनों को बेचने के लालच ने ऐसा नहीं होने दिया।

गंगा में प्रदूषण का 17 प्रतिशत फैक्ट्रियों का कचरा व उत्सर्जन है। यह अप्राकृतिक कचरा है। इसे बहाने वालों की मानसिकता भी अप्राकृतिक ही है। गंगा प्रदूषण का बाकी 3 प्रतिशत अन्य स्रोतों के कारण है। देश में कई नदियां ऐसी हैं, जिनमें जल का नैसर्गिक प्रवाह अब खत्म हो गया है। प्रदूषित कचरा...... मल ही अब उनके प्रवाह की मुख्य सामग्री है। क्या गंगा भी आज इसी रास्ते पर नहीं है ?

गंगा में मल प्रदूषण की जिम्मेदार मल शोधन संयंत्रों की अक्षमता भी है।

29 मिलियन लीटर प्रदूषित कचरा प्रतिदिन गंगा में गिरता है, जिसमें अकेले उत्तर प्रदेश का लगभग 13 लाख किलो घरेलू और औद्योगिक प्रदूषण गंगा प्रवाह को प्रदूषित करता है। ऊपर गंगा मूल में चाहे गंगोत्री में तीर्थयात्रियों का विश्रामस्थल बने होटल हों, उत्तरकाशी शहर का कूड़ा करकट..... सीवेज हो या अलकनन्दा की धारा पर श्रीनगर गढ़वाल में नगरपालिका का कचरा...... डम्प एरिया तो गंगा का पाट ही है। पंचप्रयाग, ऋषिकेश, हरिद्वार...... सब जगह गंगा के साथ अन्याय ही अन्याय है। नीचे जायें तो कानपुर की फैक्ट्रियों का कहर तो सब जानते हैं। शहर चाहे कोई हो...... कानपुर, इलाहाबाद, पटना या कलकत्ता...... सब जगह गंगा त्रस्त है। अब खुद प्रदूषित गंगा....

गंगोत्री का ग्लेशियर तो बहुत तेजी के साथ अपना आकार खो रहा है। क्यों ?

भूजल के भूरंध्रों को प्रदूषित कर रही है। ताज्जुब नहीं कि बंगाल के कुछ इलाके अब आर्सेनिक (संखिया) की चपेट में हैं।

समझ सकते है कि गंगा हत्या का जिम्मेदार कौन हैं?

सब जानते हैं कि वानस्पतिक ह्रास के कारण गंगा में प्राकृतिक झरनों का जल कम हुआ है; गाद बढ़ी है। यह क्यों हुआ? ग्लेशियर और वर्षा जल में कमी के कारण गंगा में पानी कम हुआ है। दुनिया के ग्लेशियर बहुत तेजी के साथ सिकुड़ रहे हैं। इनमें भी भारत का गंगोत्री ग्लेशियर तो बहुत तेजी के साथ अपना आकार खो रहा है। क्यों? कारण हमारी अप्राकृतिक जीवनशैली ही है ।

टिहरी बांध में बांधकर गंगा जल को मृत बनाने का प्रयास पहले ही क्या कम था, जो कि अब अकेले उत्तराखण्ड में करीब 450 छोटी–बड़ी विद्युत परियोजनाओं को मंजूर किया गया है। यह किसने किया ?

गंगा के आस–पास भूजल के शोषण की बढ़ी हुई रफ्तार ने भी गंगा का पेट खाली किया है। गंगा को समृद्ध करने वाली सहायक नदियां यमुना, रामगंगा, तमसा, गोमती, सई और सरयू आदि भी अब जलाभाव व प्रदूषण की शिकार हैं। जिस गंग नहर को कभी अंग्रेजी शासन में पहली नहर परियोजना के रूप में दोआब की समृद्धि की गारन्टी माना गया, वही गंग नहर अब गंगा की समृद्धि समेट रही है। गंग नहर पाकर दिल्लीवासियों को यमुना में काला पानी बहाने की और छूट मिल गई है, लेकिन गंगा से गंगा का पानी छिन गया है। सोचने की बात है कि जो दिल्ली अपने सिर पर बरसा पानी संजोने को तैयार नहीं, गंगा उसके लिए अपने को क्यों बर्बाद करे?

हर की पौड़ी के पास चौ. चरण सिंह बैराज, फिर बिजनौर और कलकत्ती नरोरा में बैराज के बाद तो गंगा अपना सत् ही खो देती है। सोचने की बात है कि टिहरी बांध में बांधकर गंगाजल को मृत बनाने का प्रयास पहले ही क्या कम था, जो कि अब अकेले उत्तराखण्ड में करीब 450 छोटी-बड़ी विद्युत परियोजनाओं को मंजूर किया गया है? यह किसने किया ? उत्तराखण्ड अपनी नदियों की कीमत पर ऊर्जाखण्ड बनने के सपने देख रहा है। उसे 10 हजार मेगावाट बिजली बनाकर अपनी आमदनी बढ़ाने और दूसरे राज्यों की ऊर्जा मांग पूरा करने की चिंता है, लेकिन अपनी नदियों की नहीं! सरकार पानी से पैसा कमाना चाहती है। अपनी जरूरत भर की बिज़ली तो उत्तराखण्ड की सरकार अपनी नदियों के नैसर्गिक प्रवाह को बनाये रखते हुए भी पैदा कर सकती है, लेकिन उसे तो पानी और पैसे दोनों का लालच है।

प्रकृति हमारे लालच को पूरा करने के लिए नहीं है। हमें उससे सिर्फ अपनी जरूरत भर लेने का हीअधिकार है।

वह गांधी के इस सिद्धान्त वाक्य को भूल गई है कि प्रकृति हमारे लालच को पूरा करने के लिए नहीं है। हमें इसे सिर्फ अपनी जरूरत भर लेने का ही अधिकार है। वह भी तब..... जब हम प्रकृति से लेन-देन के अपने व्यवहार में सातत्य और संतुलन बनाये रखें। हम प्रकृति से जितना और जैसा लेते हैं, उसे उतना और वैसा शुद्ध बनाकर देना हमारा दायित्व है। इस दायित्व को हमारा समाज और सरकार दोनों ही भूल गए हैं। न हमारे समाज में अपनी जरूरत से अधिक न खर्च करने का संयम बचा है और न ही सरकार में...... तो गंगा को मारने का दोष किसी और को क्यों ?

हम प्रकृति से जितना और जैसा लेते हैं, उसे उतना और वैसा शुद्ध तथा नैसर्गिक बनाकर देना हमारा दायित्व है। इस दायित्व को हमारा समाज और सरकार दोनों ही भूल गए हैं।

उत्तराखण्ड की सरकार को यह नहीं भूलना चाहिए कि गंगा पर सिर्फ उत्तराखण्ड का ही अधिकार नहीं है। यूं भी गंगा मूल में गंगा के साथ छेड़छाड़ की इजाजत तो किसी को भी नहीं दी जा सकती। कारण कि गंगा मूल का इलाका एक अनगढ़ और नया क्षेत्र है...... ठोस नहीं है। उत्तराखण्ड में गंगा और उसकी सहायक धाराओं के ढलान तेज हैं और गति तीव्र। इन धाराओं के प्रवाह में सत् भी है और सातत्य भी। गंगा यहां बाल्य व कैशोर्यावस्था में है। ऐसी स्थिति में नदियों से छेड़छाड़ करना उनकी हत्या जैसा ही है। आखिर हम कब तक हत्यारे बने रहेंगे ?

> **गंगा के बायें सीने पर नरोरा से बलिया तक 1100 किलोमीटर लम्बा और 24–25 फीट ऊंचा गंगा एक्सप्रेस वे बनाने की तैयारी कर ली गई है। दुर्भाग्य है कि हम एक बार तटबंधों में बंधी कोसी के बार–बार उफनने की घटनाओं से भी सबक लेने को तैयार नहीं हैं। ...... न राज को, ...न समाज को।**

सचमुच! आज स्थिति सोचनीय है। क्योंकि ज्यों–ज्यों गंगा का अविरल प्रवाह बाधित होगा, भिन्न कारणों से नदी धारा सकुंचित होगी; प्रदूषण और इसके प्रकोप और अधिक खतरनाक चेहरा प्रस्तुत करेंगे।

समझ सकते हैं कि कहीं गंगा बंधकर, कहीं शोषित होकर और कहीं अतिक्रमण के जरिए कोमा में पहुंची है। गंगा के बायें सीने पर नरोरा से बलिया तक 1100 किलोमीटर लम्बा और 24–25 फीट ऊंचा गंगा एक्सप्रेस वे बनाने की तैयारी कर ली गई है। यह कोई सड़क नहीं है। यह तटबंध ही है। यह गंगा को इसके पाट के जरूरी विस्तार के विपरीत बांधने और विकास के नाम पर आर्थिक जोन नामक बस्तियां बसाकर अतिक्रमण की तैयारी है। दुर्भाग्य है कि हम एक बार तटबंधों में बंधी कोसी के बार–बार उफनने की घटनाओं

से भी सबक लेने को तैयार नहीं हैं। गंगा पर अतिक्रमण से किसी को परहेज नहीं है...... न राज को, न समाज को।..... तो फिर गंगा को कौन बचायेगा ?

जिस संत-समाज को नदी और पानी की पहरेदारी सौंपी थी, वह अपने उत्तरदायित्व से चूक गया है।

यहां यह कहना जरूरी है कि गंगा को मृतप्राय बनाने की जितनी दोषी सरकार और लालची व्यावसायिक ताकतें हैं, उतना ही हमारा समाज भी। इसी के मद्देनजर इस सच को नहीं नकारा जा सकता कि अब गंगा के प्रति भारत के समाज की श्रद्धा-पूजा दिखावटी है। हमारे समाज ने पानी के किनारे मठ, मन्दिर, मस्जिद और गुरुद्वारे बनाकर जिस संत-समाज को नदी और पानी की पहरेदारी सौंपी थी, वह अपने दायित्व से चूक गया है। अब उनके निवास और पूजा के स्थान ही गंगा में अवशिष्ट बहाकर गंगा को मैला कर रहे हैं। **एक ओर तो हम जयघोष करेंगे... गायेंगे- ' हर हर गंगे! जय जय गंगे'!! और दूसरी ओर भूल जायेंगे कि गंगा के प्रति गंगा की संतानों का दायित्व क्या है। व्यवहार और सिद्धान्त का यह अन्तर खत्म किए बगैर गंगा अब बचने वाली नहीं।**

.......इसी ने गंगा को मृतप्राय बनाया है।

समझना होगा कि भारत में जलदान को महादान क्यों कहा गया ? यदि जलदान का कोई महत्व न होता तो तपती गर्मी वाले वैशाख को सब मासों में सर्वश्रेष्ठ मास क्यों कहा जाता ? भारत में कुआं, बावड़ी और सरोवर के निर्माण को धर्म का काम क्यों माना गया ? राजस्थान का समाज आज भी पानी की खरीद-फरोख्त में यकीन करने की बजाय पानी की पुरातन प्याऊ परम्परा को क्यों जिंदा रखे हुए है ?.... और यह भी कि जहां इस प्याऊ परम्परा का ह्रास हुआ, वहां के समाज का पानी कैसे उसके हाथ से निकल गया है... उनकी नदियां क्यों नष्ट हुईं?

गंगा प्रश्न : मैं इस कारण भी पृथ्वी पर नहीं जाऊंगी कि लोग मुझमें अपने पाप धोयेंगे। फिर उस पाप को धोने मैं कहां जाऊंगी?

भगीरथ उत्तर : ''माता! जिन्होंने लोक-परलोक, धन-सम्पत्ति और स्त्री-पुत्र की कामना से मुक्ति ले ली है, जो संसार से ऊपर होकर अपने आप में शांत हैं, जो ब्रह्मनिष्ठ और लोकों को पवित्र करने वाले परोपकारी सज्जन हैं.... वे आपके द्वारा ग्रहण किये गए पाप को अपने अंग स्पर्श व श्रम निष्ठा से नष्ट कर देंगे।''

सम्भवत: इसीलिए गंगा रक्षा सिद्धांतों ने ऐसे परोपकारी सज्जनों को ही गंगा स्नान का हक दिया। गंगा नहाने का मतलब ही है-सम्पूर्णता। जीवन में सम्पूर्णता का भाव जगाये बगैर गंगा स्नान का कोई मतलब नहीं। न ही उन्हें गंगा स्नान का कोई अधिकार है, जो अपूर्ण है... लक्ष्य से भी और विचार से भी। इसीलिए किसी अच्छे काम के सम्पन्न होने पर हमारे समाज ने कहा-हम तो गंगा नहा लिये।

गंगा आज फिर प्रश्न कर रही है। जवाब दीजिए कि गंगा मानव प्रदत् **पाप धोने कहां जाए?**

श्रीकृष्ण प्रेरणा प्रसंग

भगवान श्रीकृष्ण द्वारा कालियादेह मर्दन कर यमुना की शुद्धि का प्रसंग तो सुविख्यात है ही; लेकिन इतिहास में एक वक्त ऐसा भी आया, जब श्री कृष्ण ने भगीरथ की भूमिका निभाई। प्रसंग है कि गंगा अन्त-ध्र्यान हो गई। सिद्ध योगिनी राधा ने योग के द्वारा गंगा के अन्तध्र्यान होने के रहस्य को जानकर

उसे अंजली से ग्रहण कर स्वयं पीना शुरू कर दिया। गंगा का जल सूख गया। जलाभाव के कारण पानी में रहने वाले जीव-जन्तु त्राहि-त्राहि कर उठे। ब्रह्मा, विष्णु, महेश, अनन्त धर्म, स्वयं इन्द्र, चन्द्रमा, सूर्य, मनुगण, मुनि, देवता, सिद्ध तपस्वी सभी गोलोक में आये। भगवान श्री कृष्ण की स्तुति की। श्री कृष्ण ने गंगा को अपनी शरण दी। श्री कृष्ण ने ब्रह्मा से कहा कि गंगा आप लोगों को पुनः प्राप्त हो जायेगी, लेकिन शर्त यह है कि पहले देवता, मुनि, सिद्ध, अन्तधर्म... सभी समाज गंगा को निर्भय बनाने का वचन दें। उपस्थित अनुरोध कर्ताओं ने वचन दिया। ब्रह्मा ने श्रीकृष्ण और राधा दोनों की स्तुति की। राधा को भरोसा दिलाया कि गंगा भगवती और भगवान के श्रीअंग से समुत्पन्न होने के कारण सदा के लिए उनकी पुत्री ही है। अतः वह उनकी आराधक होनी चाहिए। जैसी गंगा गोलोक में है, वैसी ही सर्वत्र रहे। इस स्तुति से प्रसन्न होकर राधा ने भी गंगा को भय मुक्त किया। गंगा श्रीकृष्ण के चरणों से निकलकर नाखून के अगले हिस्से पर विराजमान हो गई। श्रीहरि चरण कमलों से प्रकट होकर ही गंगा विष्णुपदी कहलाई।

(संदर्भः ब्रह्मवैवर्तपुराण)

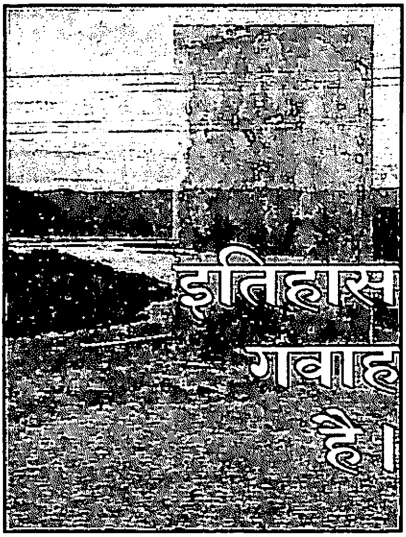

गंगा की स्मृतिछाया में सिर्फ लहलहाते खेत, माल से लदे जहाज ही नहीं, बल्कि वाल्मीकि का काव्य, बुद्ध-महावीर के विहार, अशोक, अकबर व हर्ष जैसे सम्राटों के पराक्रम तथा तुलसी, कबीर और गुरूनानक की गुरूवाणी... सब एक साथ जीवंत हो उठते हैं। जाहिर है कि गंगा... किसी एक जाति, धर्म या वर्ग की नहीं,बल्कि पूरे भारत की अस्मिता और गौरव की पहचान है। इतिहास गवाह है कि जिस देश, संस्कृति और सभ्यता ने अपनी अस्मिता के प्रतीकों को याद नहीं रखा... वह देश, संस्कृति और सभ्यतायें मिट गईं। क्या भारत इतने बड़े आघात के लिए तैयार है? यदि नहीं! .....तो क्या करें?

...क्योंकि गंगा को फिर चाहिए एक भागीरथ प्रयास।

ऐसा नहीं है कि बिगाड़ के इस पूरे दौर में गंगा को बचाने के प्रयास नहीं हुए। 1913 में भागीरथी को बचाने हेतु पं. मदनमोहन मालवीय ने एक आन्दोलन शुरू किया था। मालवीय जी हरिद्वार के घाटों पर स्नानार्थियों के लिए पर्याप्त जल की आपूर्ति सुनिश्चित कराना चाहते थे। वह इस बात को लेकर भी चिन्तित थे कि हरिद्वार के घाटों को जलापूर्ति करने वाली धारा को यदि नहर के नाम से पुकारा गया, तो गंगा के प्रति श्रद्धा भाव रखने वालों की प्रतिक्रिया विपरीत हो सकती है। मालवीय जी की दृष्टि गंगा के प्रति लोगों की आस्था और उसके विज्ञान को ठीक से समझती थी। इसीलिए उनका आन्दोलन परवान भी चढ़ा और अंग्रेजी हुकूमत गंगा संरक्षण समझौता करने को मजबूर भी हुई।

(कृपया देखें–गंगा संरक्षण समझौता 1914)

गंगा संरक्षण समझौता - 1914

1. आपूर्ति धारा क्र. 1 के लिए निकास द्वार जैसा कि इस समय है, ठीक वैसा ही रहने दिया जायेगा। अनुभवों के आधार पर यदि यह खतरनाक होता है, तब यह आवश्यक हो सकता है कि वर्तमान निकास द्वार की चौड़ाई को छोटा किया जाये, जिससे कि पानी के तल को कम होने से रोका जाये। किन्तु इसके अलावा कोई भी कदम हिन्दू समुदाय के पूर्व परामर्श के बिना नहीं उठाया जायेगा। सिंचाई विभाग की यह जिम्मेदारी रहेगी कि हरिद्वार के घाटों पर स्नानार्थियों के लिए पर्याप्त जल की आपूर्ति धारा क्र. 01 के मुक्त प्रवाह के निकास को कम कर देने से तलहटी में पर्याप्त मात्रा में मिट्टी आदि वर्तमान में जमा होगी। जिसको सैल्यूज (फाटक) द्वारा ही कम किया जा सकता है। यह बात ध्यान में रहेगी ही कि यदि वार्षिक सफाई टाली जाती है, तो पानी की कमी हो जायेगी; जैसा कि इस समय है।

2. बन्धे में एक मुक्त द्वार छोड़ा जायेगा, जिससे स्नानार्थियों को पर्याप्त पानी मिलता रहेगा और इसे कभी भी बन्द नहीं किया जायेगा। अभियन्तागण गणना करके यह सुनिश्चित करेंगे कि स्नानार्थियों को वर्ष के सभी मौसम में निरन्तर अविच्छिन्न (निर्बाध) जल प्राप्त होता रहे।

3. नई आपूर्ति धारा में पक्की दीवार नहीं बनायी जायेगी। लालजी वाला द्वीप पर होते हुए एक प्राकृतिक कटाव रहेगा। यह आशा नहीं की जाती कि आपूर्ति धारा क्र.1 की लाइनिंग को बढ़ाया जाये। ध्यान में रखा जायेगा कि हरिद्वार के घाटों को जल की आपूर्ति करने वाली धारा न तो नहर के नाम से पुकारी जायेगी और न ही वह नहर जैसी दिखलाई ही देगी।

किसकी गंगा?
कौन बचाये??

सिन्धु नदी घाटी क्षेत्र होने के कारण हिन्दुस्तान पहले 'सिन्धु स्थान' था,.... फिर 'हिन्दु स्थान' हुआ। हिन्दू शब्द ईरानी अवेस्ता में सिन्धु का ही सम्बोधन है। सिन्धु, हिन्दु, हिन्द, इन्द, इन्ड होते-होते इंडिया हो गया। जैसलमेर के गांवों में आज भी 'स' को 'ह' उच्चारित किया जाता है। अतः हिन्दुस्तान चाहने वालों को भी और इंडिया चाहने वालो को भी अपनी गंगा को तो बचाना ही होगा। आखिर गंगा के गौरव से ही तो हिन्दुस्तान और इंडिया.... दोनों का गौरव है।

यह मालवीय जी की दूरदृष्टि का आभास और भारत के लिए गंगा का महत्व ही है, जिसने कभी पंडित जवाहर लाल नेहरू जैसे धार्मिक मान्यताओं-विश्वासों व धारणाओं से तटस्थ व्यक्तित्व को भी उस सत्याग्रह में शामिल होने के लिए मजबूर किया, जिसे गंगा की पवित्रता और श्रद्धालु स्नानार्थियों की भावना की दृष्टि से पं. मदनमोहन मालवीय ने आहूत किया था।

उल्लेखनीय है कि 1934 में सत्याग्रह के दौरान सुरक्षा की दृष्टि से कुंभ मेले में संगम पर स्नान करने को लेकर पुलिस ने प्रतिबंध लगा दिया था। उस दिन जब पहरा सख्त था; मालवीय जी जैसा वृद्ध व्यक्ति अचानक भीड़ में घुस गया और प्रतिबंध तोड़कर स्नान के लिए गंगा में कूद पड़ा। नेहरू अचंभित हुए। तब पं. नेहरू ने भी उस दिन गंगा में स्नान किया और राष्ट्रीय ध्वज फहराया। इतना ही नहीं, नेहरू जी ने बाकायदा इस घटना का अपनी लेखनी से उल्लेख भी किया।

सोचिए! वह कैसा अद्भुत दृश्य रहा होगा; जब धार्मिक और राजनीतिक दृष्टि से एकदम भिन्न दो शिखर पुरुष भारत का तिरंगा थामे गंगा की धारा में खड़े होंगे!...अपनी पार्टी, अपने वाद, अपने धर्म, अपनी जाति व वर्ग को छोड़कर गंगा को इसका गौरव लौटाने के लिए एकजुट होने का यह महान विचार आज कहां दिखाई देता है ?

सोचिए! वह कैसा अद्भुत दृश्य रहा होगा; जब धार्मिक और राजनीतिक दृष्टि से एकदम भिन्न दो शिखर पुरुष भारत का तिरंगा थामे गंगा की धारा में खड़े होंगे!........ अपनी पार्टी, अपने वाद, अपने धर्म, अपनी जाति व वर्ग को छोड़कर गंगा को इसका गौरव लौटाने के लिए एकजुट होने का यह महान विचार आज कहां दिखाई देता है ? कहीं नहीं!! इसीलिए कालान्तर में हमने विकास के नाम पर कई सीढ़ियां चढ़ीं; कई सपनों को सच किया, राजनीतिक दलों और नेताओं ने भी कई पद और कई सत्ता हासिल कीं...... लेकिन भारत आज तक अपने उस पुराने गौरव को हासिल नहीं कर सका है, जिसके कारण कभी भारत दुनिया का आध्यात्मिक गुरु कहा

गया। जब सभी को सिर्फ अपने झंडे-डंडे की चिन्ता हो, तो राष्ट्र के ध्वज की चिन्ता कौन करेगा ? नदियों को उनका खोया गौरव कौन लौटाएगा ?

उन्होंने उम्मीद जाहिर की थी कि गंगा कार्य योजना महज पी.डब्ल्यू.डी. की कार्य योजना न होकर जन-जन की कार्य योजना बनेगी।

1985-86 में एक और कोशिश हुई। पूर्व प्रधान मंत्री स्व. श्री राजीव गांधी ने गंगा में प्रदूषण निवारण के लक्ष्य के साथ वाराणसी में 'गंगा कार्य योजना' का शुभारम्भ किया था। उन्होंने उम्मीद जाहिर की थी कि गंगा कार्य योजना महज पी.डब्ल्यू.डी. की कार्य योजना न होकर जन-जन की कार्य योजना बनेगी; लेकिन गंगा कार्य योजना के भावी कर्णधारों ने ऐसा नहीं होने दिया। गंगा कार्य योजना सिर्फ कुछ शहरों को प्रदूषण की दृष्टि से चिह्नित करने, कुछ ढांचे बनाने, बजट बढ़ाने और प्रदूषण बढ़ाने वाली ही साबित हुई। इसमें जनभागीदारी कभी नहीं हो सकी।

कारण कि जनता ने कभी गंगा कार्य योजना को अपना माना ही नहीं। मानें भी कैसे? जिस गंगा को गंगा का समाज अपना मानता था, उसे तो अंग्रेजी शासन ने ही समाज से छीनकर नहर और बांध निर्माण के इन्जीनियरों-ठेकेदारों को सौंप दिया था। आजाद भारत की सरकारों ने भी इसी बोध को आगे बढ़ाया।

अत: यदि गंगा को सचमुच पुनर्जीवित करना है तो इसे पुन: समाज के हाथों सौंपना ही होगा।

स्पष्ट है कि जब तक गंगा राज-समाज और संत..... तीनों की बनी रही, तब तक गंगा... गंगा थी। बाद में हर कोशिश बेकार हुई। गंगा को यदि सचमुच पुनर्जीवित करना है, तो इसे पुनः समाज के हाथों सौंपना ही होगा। राज-समाज और संत.... तीनों को मिलकर गंगा

संरक्षण में अपने दायित्व की तलाश व उसके निर्वाह के लिए व्यवस्था और नीति बनानी होगी। कुंभ के मूल अभिप्राय व सिद्धान्तों की ओर वापस लौटे बगैर लक्ष्य हासिल होने वाला नहीं।

यह एक पक्के संकल्प के साथ ही सम्भव है। विकल्प तलाशने वाले गंगा की रक्षा नहीं कर सकते।

हाल के वर्षो में गंगा को लेकर कई आवाजें उठीं। अभी जल्द ही उत्तर प्रदेश की सुश्री मायावती सरकार ने गंगा में प्रदूषण का खतरनाक स्रोत बनी करीब 450 चमड़ा इकाइयों को कानपुर से हटाकर उन्नाव के किसी इलाके में स्थानान्तरित करने का सराहनीय फैसला लिया है। गोमती और सई नदी को लेकर भी उनकी चिन्ता अखबारों में दिखाई दी।... लेकिन यह क्या बात हुई कि जो सरकार नदी प्रदूषण को लेकर चिन्तित दिखाई देती है, वही सरकार गंगा के सीने पर 1100 कि. मी. लम्बा एक्सप्रेस वे तथा हजारों एकड़ का आर्थिक जोन बनाकर गंगा और गंगावासियों को बर्बाद करने पर तुली हुई है। सरकार के इस दोहरे चेहरे का अन्तर कौन मिटाएगा ?

सुश्री मायावती सरकार ने गंगा में प्रदूषण का खतरनाक स्रोत बनी करीब 450 चमड़ा इकाइयों को कानपुर से हटाकर उन्नाव के किसी इलाके में स्थानान्तरित करने का सराहनीय फैसला लिया है।

लेकिन यह क्या बात हुई कि जो सरकार नदी प्रदूषण को लेकर चिन्तित दिखाई देती है, वही सरकार गंगा के सीने पर एक्सप्रेस वे तथा आर्थिक जोन बनाकर गंगा और गंगावासियों को बर्बाद करने पर तुली हुई है। सरकार 'कोसी' से सबक ले।

यह अन्तर हमारे अदालती निर्देशों और उनकी अनुपालना के बीच भी रोड़ा बनकर खड़ा है।

देश की सबसे बड़ी अदालत ने भी नदी संरक्षण को लेकर कई निर्देश जारी किये हैं। नदियों में बहाए जाने वाले हर कचरे को कानूनन जुर्म भी माना गया, लेकिन आज भी हमारे उद्योगों–

गंगा रक्षा सूत्र : ''पुण्यतोया श्रीगंगाजी में मल–मूत्रत्याग, मुख धोना, दंतधावन, कुल्ला करना, निर्माल्य फेंकना, मल संघर्षण या बदन को मलना आदि वर्जित है। जलक्रीड़ा अर्थात् स्त्री–पुरुषों को जल में रतिक्रीड़ा नहीं करनी चाहिए। पहने हुए वस्त्र को छोड़ना, जल पर आघात करना या तैरना भी नहीं चाहिए। बदन में तेल मलकर या मैले बदन होकर गंगाजी में प्रवेश नहीं करना चाहिए। गंगाजी के किनारे वृथा बकवाद–मिथ्याभाषण नहीं करना चाहिए। गंगाजी के प्रति कुदृष्टि और अभक्तिक कर्म करना और उसे न रोकना दोनों ही पाप हैं। इनसे बचें।''

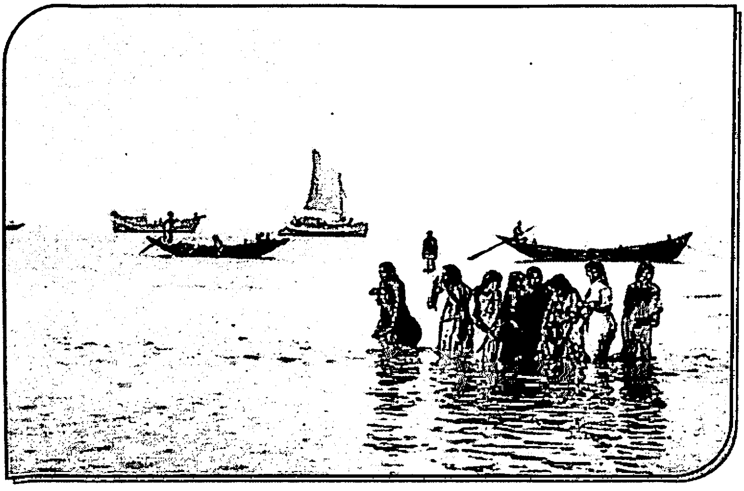

गंगा रक्षा सूत्र की पालना हर भारतीय का नैतिक कर्तव्य भी है और धार्मिक तथा राष्ट्रीय कर्तव्य भी।

निवेदक

गंगा सेवा अभियान ● जल बिरादरी

नगरपालिकाओं के नाले तो गंगा में ही खुलते हैं। आप चाहें कितना ही रोक लें; मान्यतायें चाहें कितने ही निर्देश दें, लेकिन लोग तो नदी किनारे शौच जाते ही हैं।...... यह चिन्ता किए बगैर कि अब गंगा में न उतना प्रवाह है, न जीव, न उतनी तेजी और शक्ति कि अधजले शवों और किनारे छोड़ दिये गये अवशेषों को अपने में समा कर भी गंगा पतित पावनी बनी रहे...... लोग तो गंगा में अधजले शव बहायेंगे ही और इसके किनारे अवशेष भी छोड़ ही जायेंगे। गंगा का प्रवाह जैसे शुद्ध रह सके, वैसा करना आज तक हमारी आदत नहीं बन सकी है। नेता, उद्योगपति, नगरपालिकायें, संत और समाज.... सभी इस जिम्मेदारी का निर्वाह करने में अक्षम साबित हुए हैं।

जब जिम्मेदारी का निर्वाह ही नहीं, तो हकदारी कैसी ?

याद रहे कि पुरातन नदी प्रबन्ध व्यवस्था हेतु बनाई नीति में सिर्फ उन्हें ही गंगा में स्नान का हक दिया गया था, जो जल शुद्धि को अपना व्यवहार बनाएं, नदी धाराओं को शुद्ध–सदानीरा बनाने के लिए एकजुट हों, संवाद करें, मार्ग तलाशें और अपनी नदियों को वास्तव में भारत का राष्ट्रीय गौरव बना सकें।

इस नीति वाक्य को यदि कुंभ का निर्देश मानें, तो सर्वप्रथम हमारे नीति पुरुष....... गंगा में सबसे पहले स्नान का दावा ठोकने वाले अखाड़े, मठाधीश और धर्मगुरुओं को सोचना होगा कि गंगा शुद्धि के लिए जीवन दिए बगैर गंगा में स्नान का उनका हक कितना है ? जब हम खुद ही अपनी धार्मिक–प्राकृतिक जिम्मेदारी का निर्वाह नहीं कर रहे, तो दूसरों को धर्मोपदेश देने का हक भी हमारे पास नहीं रहता। समाज भी उन्हीं की सुनता है, जो अपने उपदेशों को

गंगा में सबसे पहले स्नान का दावा ठोकने वाले अखाड़े, मठाधीश और धर्मगुरुओं को सोचना होगा कि गंगा शुद्धि के लिए जीवन दिए बगैर गंगा में स्नान का उनका हक कितना है ?

पहले स्वयं पर लागू करते हैं। स्वयं अपने हाथों से दायित्व का निर्वाह किये बगैर दूसरे को दायित्व बोध कराना यह संत का धर्म नहीं हैं।

यदि हमारे समाज को भी गंगा में स्नान का हक चाहिए, तो उसे गंगा शुद्धि और संरक्षण की अपनी जिम्मेदारी निभानी ही होगी।

अब छोटी–छोटी कोशिशों से काम चलने वाला नहीं!

यह ठीक है कि संवाद करना....... संवादहीनता को खत्म करता है; किसी अच्छे काम के लिए माहौल बनाने में सहायक होता है। संवाद हो तो हाथ भी तैयार होते हैं और रास्ता भी निकलता है। लेकिन यह भी सच है कि अलग–थलग..... टुकड़ों में बंटी हुई कोशिशें नतीजा नहीं दे सकेंगी। गंगा पर संकट इतना गहरा है और गिदद् निगाहें इतनी ताकतवर कि सीधी कार्रवाई और एकजुट होकर ही निदान सम्भव है। एकजुट होने का मतलब है..... जो जहां है, जितना है, वहां उतनी सामर्थ्य के साथ गंगा पुनर्जीवन के विचार और कार्य से जुड़ें। याद रहे कि तिनका–तिनका जुड़कर एक घरौंदा बनता है। एक–एक बूंद एक दिन विशाल सागर को भर देती है।

अतः यह मानकर कि

कोई भी सकारात्मक प्रयास छोटा नहीं होता; हम अपने स्तर पर छोटे–छोटे श्रमनिष्ठ प्रयास करते चलें। अपने हाथों से किया सद्कार्य मन में एक नई ऊर्जा भी देता है और एक निष्ठा भी। एक दिन यही श्रमनिष्ठा बड़े नतीजे लाती है और बड़ा लक्ष्य हासिल करना आसान हो जाता है।

गंगा पुनर्जीवन भी एक बड़ा लक्ष्य ही है।

अच्छी बात है कि आज कई शक्तियां गंगा की शुद्धता और अविरल प्रवाह के लिए उत्सुक दिखाई दे रही हैं। गंगा को लेकर समय–समय पर जगाई अलख अब मूर्त रूप लेने की दिशा में अग्रसर है। अब भारत की जलबिरादरी भी गंगा सेवा के जरूरी लक्ष्य प्राप्ति की पहल की पहरुआ बनी है।

... ताकि गंगा
पुनजीर्वित हो सके।

जल बिरादरी

गंगा सेवा अभियान

गंगा सेवा
और जल बिरादरी

यह सच है कि गंगा और भारत की दूसरी नदियों का संरक्षण आज बड़ी चुनौती है; क्योंकि आज गंगा और दूसरी नदियों पर शोषण, अतिक्रमण और प्रदूषण करने वाली ताकतें एकजुट हैं। ये अपने फायदे के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार हैं। गंगा रहे या जाये, गंगा........ इनकी प्राथमिकता नहीं है। अतः जरूरी है कि सबसे पहले गंगा हमारी प्राथमिकता बने। यह सब एक दिन में होने वाला नहीं। गंगा बचाने को लेकर गंगा किनारे के अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग लोगों द्वारा आवाजें उठती ही रही हैं; लेकिन कहीं संकल्प की कमी और कहीं एकता के अभाव ने नतीजे नहीं दिए। स्पष्ट है कि गंगा के साथ मजबूत रिश्ते वाले वर्ग की पहचान और उसे एकजुट किए बगैर नतीजे आने वाले नहीं।

23 दिसंबर, 2002 को राजघाट, नई दिल्ली से जलबिरादरी द्वारा आहूत राष्ट्रीय जलयात्रा कभी नहीं भूलती। जलयात्रा के दौरान जलबिरादरी ने देश की जिन छोटी-बड़ी 144 नदियों से साक्षात्कार किया, उनमें से गंगा भी एक है। किसी नदी को उसके तट पर जाकर देखे बगैर हम उसके सत् और कष्ट को नहीं समझ सकते। इस यात्रा ने हमारी आखें खोल दीं। हमारे मन को भीतर ही भीतर झकझोर दिया। इसी दौरान जल बिरादरी के मन में पहली बार अपनी नदियों को बचाने का संकल्प जागा और हम नदी संरक्षण के काम में लग गये। इसके बाद हम नदी-नदी गये।

23 दिसंबर, 2002 को राजघाट नई दिल्ली से जलबिरादरी द्वारा आहूत राष्ट्रीय जलयात्रा कभी नहीं भूलती। जलयात्रा के दौरान जलबिरादरी ने देश की जिन छोटी-बड़ी 144 नदियों से साक्षात्कार किया, उनमें से गंगा भी एक है।

12 मार्च, 2003 को जलबिरादरी ने गंगा संरक्षण हेतु क्षमता जुटाने की शुरुआत वहीं से की, जहां टिहरी बांध का अंधेरा भी था और इस अंधेरे में दीप जलाने वाले श्री सुन्दरलाल बहुगुणा भी। श्री अफसर हुसैन जाफरी के समन्वयन में हम ऋषिकेश, देहरादून, हरिद्वार, मंगलोर, रुड़की, मेरठ....... कई जगह गये। अच्छी ताकतों को एकजुट करने की कोशिश की। इस काम में हमें उत्तरांचल जलबिरादरी के पुरोधा श्री शमशेर सिंह बिष्ट, बहन राधा भट्ट, रवि चोपड़ा, सुरेश भाई के साथ-साथ कई दूसरे प्रमुख साथियों और गांवों का सहयोग मिला। नामी बहन डा. वन्दना शिवा, भारतीय जागृति मिशन..... सभी सहाय हुए। हमने गंगा पुत्रों से बार-बार

12 मार्च, 2003 को जलबिरादरी ने गंगा संरक्षण हेतु क्षमता जुटाने की शुरुआत वहीं से की, जहां टिहरी का अंधेरा भी था और इस अंधेरे में दीप जलाने वाले श्री सुन्दरलाल बहुगुणा भी।

अपील की। गंगा के अविरल प्रवाह को बाधित करने, निजीकरण और प्रदूषण की कोशिशों को समझा.... समझाया। बहुराष्ट्रीय कम्पनी 'स्वेज़ डेग्रोमॉन्ट' द्वारा की जा रही पवित्र गंगाजल की चोरी के खिलाफ गंगा संसद की। जो दिल्ली गंगाजल को अपने शौचालयों में बहाती है, उसके लिए गंगा से पानी चोरी की इजाजत क्यों हो? ऐसे कई मुद्दों पर बहस खड़ी की। जनान्दोलन के लिए सड़कों पर उतरे। लेकिन भारत के पानी पर लगी गिदद् निगाहें और उसे बढ़ावा देने वाली हमारी सरकारें इतनी मगरूर हैं कि हमें लगा कि अब सत्य का आग्रह किये बगैर काम चलने वाला नहीं। जरूरी है कि अब सीधी कार्रवाई हो। हमने जलबिरादरी के साथियों से बार-बार संवाद किया और तय हुआ कि वर्ष 2008 को 'नदी संरक्षण सत्याग्रह' घोषित करें, सभी एकजुट हों और अपनी नदियों को सुरक्षित-संरक्षित करने के लिए आगे बढ़ें।

तय हुआ कि वर्ष 2008 को 'नदी संरक्षण सत्याग्रह' घोषित करें सभी एकजुट हों और अपनी नदियों को सुरक्षित-संरक्षित करने के लिए आगे बढ़ें।

नदी संरक्षण सत्याग्रह 2008 में लोगों से लगातार संवाद के बाद

यह बात तो स्पष्ट हो गई कि गंगा के साथ सबसे मजबूत और गहरा रिश्ता गंगा किनारे स्थापित संतों और भक्तों का है। भक्तों में कावड़ियों.. स्नानार्थियों के दल एक बड़ा प्रभावकारी माध्यम बन सकते हैं। इसी के मद्देनजर जल बिरादरी ने गंगा संस्कार बनाने हेतु कावड़ियों के साथ कार्य शुरू किया है। उत्तर प्रदेश में बागपत जिले में प्रख्यात पुरामहादेव धर्म स्थान व ग्राम डौला के आस-पास के कावड़िए इस अभियान से जुड़ रहे है। नदी और नीर के साथ नारी के रिश्ते की महत्ता भी कम नहीं है। नारी की आस्था और क्षमता गंगा संरक्षण में एक बुलंद आवाज बन सकती है।

नदी और नीर के साथ नारी के रिश्ते की महत्ता भी कम नहीं है। नारी की आस्था और क्षमता गंगा संरक्षण में एक बुलंद आवाज बन सकती है।

जलबिरादरी ने जब वर्ष 2008 को नदी संरक्षण सत्याग्रह वर्ष घोषित किया, तभी गंगा दशहरा को 'नदी दिवस' और 20 मार्च को 'जलाधिकार दिवस' के रूप में मनाने का संकल्प जताया। कुछ ऐसा ही संकल्प जाने-माने पर्यावरण विशेषज्ञ-वैज्ञानिक.. आई.आई.टी. के बड़े प्रोफेसर और तरूण भारत संघ जैसे जमीनी और सरल काम करने वाले संगठन के उपाध्यक्ष प्रोफेसर जी.डी.अग्रवाल जी के मन में भी

बरसों से उमड़-घुमड़ रहा था। यह उनकी ही चिन्ता है, जिसने छोटे-छोटे तालाबों को बनाकर रचना के छोटे-छोटे काम करने वाले संगठनों को भी नदी पर अत्याचार का प्रतिकार करने को प्रेरित किया।

प्रो. अग्रवाल वैज्ञानिक होते हुए भी गंगा की रक्षा को विज्ञान का नहीं, अपनी आस्था का प्रश्न मानते हैं। उन्होंने जल बिरादरी द्वारा घोषित 'नदी दिवस' को भारत की सब नदियों कीं प्रतीक गंगा की रक्षा का 'संकल्प दिवस' मान लिया। प्रो.अग्रवाल ने बसंतपंचमी 2008 को घोषणा की कि यदि गंगा की मूल धारा भागीरथी का गोमुख से लेकर उत्तरकाशी तक अविरल प्रवाह सुनिश्चित नहीं किया गया, तो वह 13 जून, 2008 को गंगा दशहरा के दिन से उत्तरकाशी में आमरण अनशन करेंगे।

उन्होने जल बिरादरी द्वारा घोषित 'नदी दिवस' को भारत की सब नदियों की प्रतीक गंगा की रक्षा का 'संकल्प दिवस' मान लिया।

उत्तराखण्ड सरकार ने इस चेतावनी को नजरअंदाज करते हुए गंगा दशहरा से ठीक दो दिन पहले गंगोत्री और उत्तरकाशी के बीच भागीरथी पर एक और जलविद्युत परियोजना का उद्घाटन कर दिया। प्रो. जी.डी.अग्रवाल का संकल्प पक्का था। देशभर में जल बिरादरी व दूसरे कई संगठन उनके समर्थन में जुट गये थे। अनशन शुरू होना ही था, सो हुआ।

इसी दिन जहां एक ओर उत्तर की काशी में प्रो. अग्रवाल के निश्चय

की धमक सुनाई दी, वहीं दूसरी ओर पूरब की काशी.....वाराणसी में गुरु दण्डीस्वामी जी ने भी आमरण अनशन शुरू कर दिया। इसी दिन जल बिरादरी की लगभग समस्त प्रदेश इकाइयों ने इस अनशन के समर्थन में उपवास रखा और अपनी–अपनी स्थानीय नदी के संरक्षण हेतु प्रयास का संकल्प लिया। देश भर में नदी दिवस के संकल्प और संदेश को प्रचारित कर मीडिया ने भी अहम् भूमिका निभाई।

शंकराचार्य जगद्गुरु स्वामी स्वरूपानंदजी का समर्थन

मुख्य मंत्री भुवनचंद्र खंडूड़ी ने कहा कि मैं पर्यावरणीय समस्याओं पर 'भागीरथी बचाओ' आंदोलनकारियों से बातचीत करने को तैयार हूं, लेकिन ऊर्जा हमारे प्रदेश की बुनियादी आवश्यकता है और मेरी सरकार उत्तराखंड को ऊर्जा प्रदेश बनाने के लिए प्रतिबद्ध है।

पर्यावरणविद डॉ. जीडी अग्रवाल प्राणों की आहुति देने पर तुले

गंगा को बचाओ!

• राजेश चौधरी

भागीरथी गंगा के अस्तित्व से किये जा रहे खिलवाड़ से क्षुब्ध प्रख्यात पर्यावरण वैज्ञानिक प्रो. गुरुदास अग्रवाल ने 13 जून से अपने पूर्व घोषित निर्णय के अनुसार उत्तरकाशी में मणिकर्णिका घाट पर 'आमरण अनशन' शुरू कर दिया है। अनशन पर बैठते हुए प्रो. अग्रवाल ने स्पष्ट घोषणा की कि जब तक प्रधान मंत्री, उत्तरकाशी से गंगोत्री तक भागीरथी गंगा पर शुरू की जा रही जल विद्युत परियोजनाओं को रद्द करने का लिखित पत्र नहीं देंगे, उनका अनशन समाप्त नहीं होगा। उन्होंने ऐलान किया कि यदि केंद्र और प्रदेश की सरकारें गंगा को बचाने का लिखित संकल्प व्यक्त नहीं करतीं, तो मेरी 'आहुति' निश्चित है।

इसी दिन जल बिरादरी की समस्त प्रदेश इकाइयों ने इस अनशन के समर्थन में उपवास रखा।

जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती जी समेत देश के नामी–गिरामी संतों ने भी संदेश भेजकर सबसे पहले अपना समर्थन दिया।

देश के अलग–अलग इलाकों से उठी इन आवाजों की आहट से राज्य व केन्द्र सरकारें कुछ सचेत हुईं। उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री मायावती जी ने नदी संरक्षण हेतु तत्काल एक उच्चसमिति गठित करने की घोषणा की। बिहार के मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार ने भी गंगा शुद्धि हेतु अपनी प्रतिबद्धता प्रकट की। उधर दिल्ली की सत्ता में भी कुछ हलचल सुनाई दी। उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री श्री भुवनचन्द्र खंडूरी जी ने भी इस आहट को सुना। उनके खुफिया तंत्र ने उन्हें सचेत किया। परिणामस्वरूप माननीय मुख्यमंत्री ने भागीरथी पर उत्तरकाशी से ऊपर बन रही तीन में से दो जल विद्युत परियोजनाओं का कार्य एक दिन अचानक रोक दिया।

19 जून 2008 को उत्तराखण्ड सरकार द्वारा प्रो. गुरुदास अग्रवाल को प्रेषित पत्र

अ.शा. संख्या 140/पी0एस0/कैम्प/2008 दिनांक 19 जून 2008

कृपया अपने पत्र दिनांक 7 जून, 2008 का सन्दर्भ ग्रहण करें, जो कि गंगोत्री से धरासूं तक गंगा नदी के नैसर्गिक प्रवाह को बनाये रखने विषयक है। इसके पूर्व आपने एक पत्र दिनांक 14 अप्रैल, 2008 को भी लिखा था, जिसमें उत्तरकाशी से ऊपर भागीरथी नदी का नैसर्गिक स्वरूप बरकरार न रखने के विरोध स्वरूप आपके द्वारा आमरण अनशन दिनांक 17 जून, 2008 से प्रारम्भ करने की बात कही गयी थी।

गोमुख से उत्तरकाशी के मध्य भागीरथी नदी में तीन विद्युत परियोजनायें निर्माणाधीन प्रस्तावित हैं। इनमें से दो परियोजनाएं, भैरव घाटी '381 मेगावाट' तथा पाला मनेरी '480 मेगावाट' उत्तराखण्ड जल विद्युत निगम द्वारा बनायी जानी प्रस्तावित हैं। तीसरी परियोजना लोहारी नागपाला '600 मेगावाट' केन्द्र सरकार की इकाई-एन.टी.पी.सी. द्वारा निर्मित की जा रही है। पाला मनेरी परियोजना में उत्तराखण्ड जल विद्युत निगम द्वारा लगभग रु. 80 करोड़ का व्यय किया जा चुका है।

इस प्रकार निर्माणाधीन प्रस्तावित तीन परियोजनाओं में से दो के बारे में ही राज्य सरकार निर्णय लेने में सक्षम है। इन परियोजनाओं पर तत्काल प्रभाव से काम रोक दिए जाने का निर्णय राज्य सरकार ने लिया है।

इससे बौखलाकर जलविद्युत कम्पनी के गुण्डों ने अनशन स्थल पर पहुंचकर अनशनकारियों का सामान नदी में फेंक दिया... धमकी दी। स्वामी परिपूर्णानन्द सरस्वती जी पर हमला भी किया।

प्रो. अग्रवाल ने इसे अपनी सफलता मानते हुए आगे का संघर्ष दिल्ली की सरकार के समक्ष करने का निर्णय लिया; लेकिन जलबिरादरी का मानना था कि मुख्यमंत्री का पत्र पूरी तरह आश्वस्त नहीं करता। इसमें सिर्फ परियोजनाओं को रोकने की बात कही गई है.... परियोजनाओं को रद्द करने की नहीं। अतः जलबिरादरी ने 22 जून, 2008 को एक जनसभा कर सरकार से अपना विरोध दर्ज कराया। इसी संकल्प को आगे बढ़ाते हुए 23 जून, 2008 से हर की पौड़ी पर स्वामी परिपूर्णानन्द सरस्वती और श्री प्रेमदत्त नौटियाल ने आमरण अनशन की घोषणा कर दी। मांग एक थी कि गंगा को राष्ट्रीय नदी घोषित किया जाये। इसके बाद तो जैसे देश में गंगा की लड़ाई तेज हो गई। संत अविमुक्तेश्वरानन्द जी ने जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द जी की प्रेरणा से जलबिरादरी के साथ मिलकर गंगा सेवा अभियान का श्रीगणेश कर दिया। देश की सप्त मोक्षपुरियों में सांकेतिक अनशन की तैयारी शुरू हो गई। 29 जून, 2008 को अनशन हुआ और संतों के समक्ष सवाल भी खड़े किये गये कि गंगा की शुद्धि तो संतों की ही जिम्मेदारी थी; वे इसे क्यों नहीं निभा रहे? यह एक तरह से संतों को उनके संस्कार व कर्तव्य का एहसास कराने की दिशा में उठा कदम था। 12 जुलाई, 2008 को देश के सभी ज्योतिर्लिंगों में गंगा सभायें आयोजित की

23 जून 2008 से हर की पौड़ी पर स्वामी परिपूर्णानन्द सरस्वती और श्री प्रेमदत्त नौटियाल ने आमरण अनशन की घोषणा कर दी।

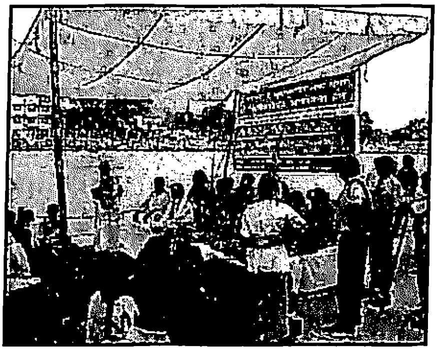

गईं, ताकि भक्त कावड़ियों के मन में गंगा के प्रति अपने कर्तव्य का प्रश्न उठ सके। वे सोच सकें कि वे अपने आराध्य शिव पर जिस जल को चढ़ाने जा रहे हैं, क्या वह जल अब इस लायक बचा है? गंगा सभा में यह आह्वान किया गया कि दूषित जल को शिवलिंग पर चढ़ाना महापाप है। इससे शिव प्रसन्न होने के बजाय क्रोध में सब कुछ बिगाड़ दें, तो कोई अचम्भा नहीं। यह बात सिर्फ लोगों के मन में कर्तव्य का एहसास जगाने के लिए ही कही गई। लोक सहमति पर गंगा लोकादेश भी जारी हुआ।

इस सारे प्रयास का नतीजा यह है कि प्रो. जी.डी. अग्रवाल की सदस्यता के साथ केन्द्र सरकार ने नदी के प्रवाह पर जलविद्युत परियोजना के प्रभाव की जांच हेतु एक उच्च स्तरीय समिति गठित की है। यूं उत्तराखण्ड की परियोजनाओं पर रोक का आश्वासन भी अधूरा ही है और सुझाव हेतु उच्च स्तरीय समिति के गठन की बात भी गंगा प्रवाह की पवित्रता और अविरलता को लेकर आश्वस्त नहीं करती। हर की पौड़ी पर शुरू हुआ अनशन भी किसी ठोस आश्वासन पर नहीं पहुंचा। पुलिस और प्रशासन वहां भी सिर्फ अनशन समाप्त कराने की कोशिश में ही लगे रहे, लेकिन गंगा को राष्ट्रीय नदी घोषित करने का संकल्प सरकार में कहीं दिखाई नहीं दिया।

हमारी कोशिश है कि हम गंगा संरक्षण के लिए जारी लोकादेश को लेकर पूरे देश में जायें।

हमारी कोशिश है कि हम गंगा संरक्षण के लिए जारी लोकादेश को लेकर पूरे देश में जायें। आज जो प्रयास गंगा व कुछ अन्य नदियों पर हुआ है, वैसे ही बिगुल पूरे देश में सुनाई पड़ें। हमारी नदियों पर संकट इतना गहरा और तेज है कि अब बिना एक स्वर.... एकजुट हुए काम चलने वाला नहीं। उम्मीद है कि अब आवाज उठी है, तो दूर तक जायेगी ही।

इसी लक्ष्य और विश्वास की परिणति है- जगद्गुरू शंकराचार्य स्वामी श्री स्वरूपानन्द सरस्वती जी की पहल और राजेन्द्र सिंह,

जल बिरादरी के संयोजन में गठित गंगा सेवा अभियान। गंगा सेवा अभियान ने भारत सरकार द्वारा भगीरथी का प्रवाह सुनिश्चित करने के लिए गठित उच्च स्तरीय समिति से नाउम्मीदी जताते हुए भारत सरकार को सहयोग करने की दृष्टि से गंगा ज्ञान आयोग गठित किया है। गंगा को पुनः प्रदूषणनाशनी बनाने हेतु सुझाव देने के लिए गठित इस आयोग में सात सदस्य हैं :

भारत सरकार को सहयोग करने की दृष्टि से गंगा ज्ञान आयोग गठित किया है।

1. डा. एम. आनन्दकृष्णन (चेन्नई)
2. डा. आर.एच. सिद्दिकी (अलीगढ़)
3. श्री. पी. सी. त्यागी (दिल्ली)
4. प्रो. जी. डी. अग्रवाल (चित्रकूट)
5. डा. आर. सी. त्रिवेदी (दिल्ली)
6. डा. कमलजीत सिंह चावला (दिल्ली)
7. डा. रवि चोपड़ा (देहरादून)

ये सातों गंगा विशेषज्ञ देश के पर्यावरण और परिवेश के नामी ज्ञाता हैं। ये सभी भारत के लिए गंगा को जीवित रखना जरूरी मानते हैं। गंगा सेवा अभियान... गंगा ज्ञान आयोग की रिपोर्ट पर रायशुमारी के बाद तय निर्णयों को सरकार और समाज सभी के सामने रखेगा।

गंगा सेवा अभियान मानता है कि कुंभ जैसी अपनी अच्छी परम्पराओं के मूल अभिप्राय और व्यवहार को जाने और माने बगैर गंगा संरक्षण के लिए ताकत जुटा पाना सम्भव नहीं। अतः गंगा सेवा अभियान ने राज–समाज को कुंभ की मूल अवधारणा से जोड़ने के लिएं जगह–जगह अलग–अलग नदियों के किनारे कुंभ आयोजन का फैसला किया है। ये कुंभ नदियों की लोक नीति बनाकर भारत में नदी संरक्षण के काम को आगे बढ़ायेंगे। यह हमारी आंकाक्षा भी है और लक्ष्य भी। ❑

गंगा एक्सप्रेस-वे अध्ययन यात्रा

(9 से 15 जनवरी 2008) यमुना सत्याग्रह स्थल, दिल्ली से बलिया

जैसे ही हमें उत्तर प्रदेश सरकार के प्रस्तावित गंगा एक्सप्रेस–वे के प्रस्ताव की जानकारी मिली, हमारे कान खड़े हो गए। गंगा एक्सप्रेस–वे कोई सड़क नहीं, बल्कि यह तो एक तरह से गंगा के बाढ़ क्षेत्र के भीतर एक तटबन्ध है। नदी के उत्तरी तट पर वर्तमान प्रवाह से इसकी दूरी नदी बाढ़ क्षेत्र के भीतर स्थाई निर्माण की मनाही के वैज्ञानिक मानदंडों के एकदम खिलाफ है। इससे गंगा, गंगा किनारे की आबादी व भूगोल सब जायेंगे। उत्तर बिहार की नदियों पर निर्मित तटबन्धों के अनुभवों ने अब तक हमें यही सिखाया है। हमने पांच जनवरी 2008 को वाराणसी में सभा कर सरकार को पहले ही चेताया था; लेकिन सरकार तो टेंडर, आर्थिक जोन और आठ घन्टे में बलिया से दिल्ली की सत्ता तक पहुंचने की बेसब्री में व्याकुल है।

अपने को दलितों की बेटी कहने वाली मुख्यमंत्री को इस मामले में गंगा किनारे के मजदूर, दलित, मल्लाह तथा छोटी काश्तकारी वाली आबादी को उजाड़ने से भी परहेज नहीं है। आखिर यह परियोजना इन्हें ही तो उजाड़ने वाली है।

जब कोई सरकार हठधर्मिता पर उतर आए, तो हमारे जैसे सामाजिक पहरेदारों के पास सिवाय इसके और क्या चारा बचता है कि जो सच है, हम वह कहें; सत्य का आग्रह करें। श्री रामधीरज जी की अगुवाई में उत्तर प्रदेश जल बिरादरी का एक सात सदस्यीय अध्ययन दल 9 जनवरी, 2008 को यमुना सत्याग्रह स्थल, दिल्ली से चलकर एक्सप्रेस–वे के रास्ते छह दिन की यात्रा पर बलिया रवाना हुआ।

अध्ययन दल प्रस्तावित एक्सप्रेस–वे को लेकर किए जा रहे बाढ़ नियंत्रण, यातायात व विकास संबंधी सरकारी दावों के अध्ययन पर निकला था। इसमें श्री रामधीरज, उत्तर प्रदेश जल बिरादरी के अरविन्द कुशवाह, ईश्वरचन्द, तरुण भारत संघ के सत्येन्द्र सिंह, विनोद कुमार, राकेश सिंह तथा पत्रकार अरुण तिवारी शामिल हुए।

अध्ययन दल का अनुमान है कि यह गंगा एक्सप्रेस–वे गंगा का मारक तटबन्ध साबित होगा। क्योंकि इसका ज्यादातर रूट गंगातट से 1.5 कि मी के आसपास से होकर गुजरेगा। इसकी ऊंचाई 7.8 मीटर होगी। इससे गंगा की बाढ़ का प्रकोप तथा इसकी जैविकी का संकट और बढ़ेगा। गंगा के दाएं तटीय क्षेत्र अभी बाढ़ से कम प्रभावित होते हैं, वहां भी बाढ़ का प्रकोप बढ़ेगा। उत्तर बिहार में तटबंधों के अनुभव बताते हैं कि अभी गंगा में 10 से 15 दिन तक टिकने वाली बाढ़ की अवधि व प्रवाह में वृद्धि होगी। निचला ढाल क्षेत्र होने के कारण एक तट जल भराव से प्रभावित होगा, तो तट से दूसरी ओर पानी की कमी के क्षेत्र बनेंगे; साथ ही खेती का मिजाज भी बदलेगा। इससे गंगा के जैविकी में नकारात्मक बदलाव तथा इलाकों की पशुधन व वन सम्पदा पर भयानक कुठाराघात की आशंका से भी इन्कार नहीं किया जा सकता।

अध्ययन दल का अनुमान है कि गंगा एक्सप्रेस–वे से 80 हजार वर्ग हेक्टेयर का भूगोल, 250 करोड़ का वार्षिक फसल उत्पादन और पांच करोड़ 21 लाख की आबादी सीधे–सीधे प्रभावित होगी। इससे तीन लाख से अधिक लोग विस्थापित होंगे। सरकार को चाहिए कि वह इन तथ्यों को ध्यान में रखकर ही परियोजना पर काम करे। एक्सप्रेस–वे बाढ़, सुखाड़, दलदल, बंजर के इलाके बढ़ायेगा तथा बड़ी संख्या में वनस्पति को नुकसान पहुंचायेगा। सिर्फ इतना ही नहीं, यह एक्सप्रेस–वे प्रदेश में अपराध व नई झोपड़पट्टियों को भी जन्म देगा।

दल ने स्पष्ट किया कि गंगा उत्तर प्रदेश की आस्था और संस्कृति की महाधारा है। आखिर किसी भी सरकार को आस्था के तीर्थों के साथ छेड़छाड़ की इजाजत कैसे दी सकती है? जल बिरादरी ने सवाल

उठाया कि आखिर एक्सप्रेस–वे को लेकर सरकार इतनी जल्दी में क्यों है कि पर्यावरणीय प्रभाव के पूर्व आकलन, व्यावहारिकता रिपोर्ट व जन सुनवाई की पूर्व प्रक्रिया अपनाए बगैर ही परियोजना का शिलान्यास कर दिया गया? यदि यह परियोजना उ.प्र. के हित में है, तो जनता से सहमति और सुझाव क्यों नहीं लिए गए? ऐसा लगता है कि उ.प्र. की मायावती सरकार भी अन्य सरकारों की तरह विश्व बैंक के डंडे पर काम कर रही है। सिंचाई विभाग पहले ही विश्व बैंक के ठेके पर है।

दरअसल सरकार को किसी दबाव में आने की बजाय उत्तर बिहार में तटबन्धों के कारण कोसी बाढ़ के बढ़े प्रकोप से सीख लेनी चाहिए। विस्थापितों के पुनर्वास को लेकर नर्मदा के अनुभवों को भुलाया नहीं जा सकता। यूं भी कोई भी आबादी निर्जीव नहीं होती कि उसे एक जगह से उठाकर दूसरी जगह फेंक दिया जाये। आज तक कोई भी सरकार विस्थापित आबादी, पशुधन, परिवेश तथा सम्बन्धों व पुरखों की थाती का ठीक से पुनर्वास नहीं कर सकी है। अध्ययन दल ने उत्तर प्रदेश के संगठनों के साथ मिलकर फरवरी, 2008 से गंगा तट के सभी गावों में जाकर गहन अध्ययन व जन जागरण अभियान चलाने का निश्चय किया। उत्तर प्रदेश सर्वोदय मंडल, आज़ादी बचाओ आन्दोलन तथा कई बुद्धिजीवी, छात्र व किसान संगठनों ने मिलकर इस काम को आगे बढ़ाया। दूसरे संगठनों ने अदालत में भी गंगा एक्सप्रेस–वे को चुनौती दी है। जलबिरादरी ने उ. प्र. सरकार और माननीय राज्यपाल को इस बारे में ज्ञापन भी सौंपा है। इसके **मुख्य बिन्दु** इस प्रकार हैं :–

1. गंगा सजीव है और एक्सप्रेस–वे निर्जीव। अतः गंगा बाढ़ नियंत्रण के पहलू को एक्सप्रेसवे से जोड़ने की भयानक भूल न करे। सरकार गंगा एक्सप्रेस–वे का पर्यावरणीय ऑडिट कराए।

2. इतने विशाल ढांचे व लम्बी अवधि वाली परियोजनाओं से विस्थापितों के पुनर्वास की योजना चाहे कितनी भी आकर्षक क्यों न हो, कोई भी दलगत सरकार या मुख्यमंत्री इसके सफल क्रियान्वयन का दावा नहीं कर सकती, क्योंकि वे स्वयं स्थायी नहीं होती।

गंगा एक्सप्रेस–वे परियोजना बड़ी संख्या में गरीबों, दलितों व मछुआरों की आबादी को उनकी जड़ों व पारंपरिक पेशों से उखाड़ देगी। किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था में लोक सहमति प्राप्त किए बगैर किसी आबादी को उजाड़ने–बसाने की प्रक्रिया शुरु करने का हक किसी को नहीं होता। गंगा एक्सप्रेस–वे के मूल प्रस्ताव पर जन सहमति कतई नहीं दी जा सकती । अतः सरकार गंगा एक्सप्रेस–वे निर्माण के लिए चालू भूमि अधिग्रहण प्रक्रिया को तत्काल प्रभाव से रोके ।

3. उत्तर प्रदेश में सुचारु यातायात तंत्र खड़ा करने के लिए वर्तमान राष्ट्रीय राजमार्ग, जी. टी. रोड व अंतरमार्गों को दुरुस्त करना व आपस में ठीक से जोड़ना बेहतर विकल्प है। जल मार्ग सम्भावना की तलाश भी लाभप्रद हो सकती है ।

4. आर्थिक विकास के लिए प्राथमिक स्तर पर उत्तर प्रदेश की परिस्थिति, संसाधन, लोकज्ञान, कौशल व शक्ति को आधार बनाकर छोटे–छोटे उद्यमों व सहकारिता का बड़ा तंत्र खड़ा करने की आवश्यकता है। प्राकृतिक विनाश की कीमत पर खड़ा किया गया विकास का ढांचा स्थाई नहीं होता। हमें सतत एवम् स्थायी विकास की अवधारणा को विकल्प बनाना होगा। ......ऐसा विकास जिसकी चाबी उत्तर प्रदेश की सरकार व समाज के नियंत्रण में बनी रह सके। प्रस्तावित पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप की अवधारणा सिर्फ पब्लिक के संसाधनों पर निजी का कब्जा बनाने वाली साबित होगी। साझा समान स्तर के हाथों में ही व्यावहारिक व न्यायपूर्ण होता है, वरना एक दास व दूसरा मालिक की स्थिति में आ जाता है।

5. गंगा एवं अन्य नदियों की समृद्धि के बगैर उत्तर प्रदेश की समृद्धि की कल्पना हमेशा अधूरी ही रहेगी। अतः सरकार नदी संरक्षण एवं समृद्धि के प्रति पायबंद हो।

गंगा लोकादेश

1. राष्ट्रीय पशु-पक्षी, पुष्प आदि प्रतीक की भांति 'गंगा-एक राष्ट्रीय नदी प्रतीक' के रूप में संवैधानिक तौर पर मान्य एवम् संरक्षित हो। संबन्धित प्रदेश भी गंगा की मुख्य सहायक नदियों को 'प्रादेशिक नदी' के रूप में घोषित एवम् संरक्षित करें।

2. केन्द्र व गंगा के प्रदेश मिलकर गंगा व्यवहार नीति बनायें।

3. गंगा के भू-उपयोग व स्वामित्व में कभी... किसी भी प्रकार का परिवर्तन वैधानिक तौर पर मान्य न हो।

4. गंगा हेतु विशेष पारिस्थितिकीय प्रवाह के मानक निर्धारित हों और उनकी पालना सुनिश्चित करने की व्यवस्था बने।

5. गंगा प्रदूषण नियंत्रण हेतु सरकार, स्थानीय समुदाय, पंचायत, नगरपालिका व स्वयंसेवी संगठनों के प्रतिनिधियों को जोड़कर निगरानी इकाइयों का गठन एवम् उन्हें कार्रवाई के वैधानिक अधिकार दिए जाएं।

6. गंगा प्रदूषण नियंत्रण की जवाबदेही सुनिश्चित हो। जल प्रदूषण से होने वाली बीमारी व मौतों के मामलों में न सिर्फ प्रदूषकों, बल्कि प्रदूषण नियंत्रण हेतु जवाबदेह तंत्र के खिलाफ भी दीवानी अदालतों में मुकदमा चलाने का प्रावधान हो। किसी की हत्या करने वाला सिविल कोर्ट में सिर्फ जुर्माना भरकर कैसे बच सकता है?

7. गंगा में मैला डालना एक बड़ा प्राकृतिक अपराध है। अत: यह सुनिश्चित हो कि ग्राम पंचायतें, नगर निगम व पालिका अपने सीवेज कचरे को गंगा में कदापि न डालें। पूरे देश में जल शोधन की एक जैसी प्रणाली कारगर नहीं हुई है। अत: स्थानीय पारिस्थिति के अनुसार स्थानीय समाधान व संसाधन को प्रथमिकता दें।

8. गंगा के सर्वोपरि बाढ़-बिन्दु के दोनों ओर कम से कम 100 मी. चौड़े क्षेत्र को व्यापक स्तर पर हरी घास तथा स्थानीय जैवविविधता का सम्मान करने वाली वनस्पति के सघन क्षेत्र के रूप में संरक्षित एवम् संवर्द्धित किया जाए।

9. सरकार जनसहमति से गंगा के ऊपरी, मध्य व निचले छोरों में पानी की प्रकृति व उपलब्धता के अनुसार बसावट, उद्योग व खेती की सीमा व प्रकार का निर्धारण करे।

10. सरकार देश की आर्थिकी व ऊर्जा की जरूरतों को पूरा करने के लिए सिर्फ 'सेज़' और 'जल विद्युत' पर पूरा जोर लगाने की बजाय, विकास व ऊर्जा के अन्य विकल्पों को भी बराबर तवज्जो दे तथा तदानुसार निवेश बढ़ाये।

उपरोक्त आदेशों की पालना सुनिश्चित करना व कराना हर भारतीय का कर्तव्य है। इसके लिए सभी संकल्पबद्ध हों।

गंगा सेवा अभियान

... ताकि गंगा पुनर्जीवित हो सके।

गङ्गा सेवा अभियान का निवेदन

जो भूल गये, वे याद करें!

ए नये भारत के दिन बता!
ए नदिया जी के कुंभ बता!! उजरे-कारे सब मन बता!!!
क्या गङ्गदीप जलाना याद तुम्हें या कुंभ जगाना भूल गये?
या भूल गये कि कुंभ सिर्फ नहान नहीं, गङ्गा यूं ही थी महान नहीं।
नदी सभ्यतायें तो कई जनी, पर संस्कृति गङ्ग ही परवान चढ़ी।
'नदियों में गङ्गधार हूं मैं' – क्या श्रीकृष्ण वाक्य तुम भूल गये?
ए नये भारत के दिन.........
यहीं मानस की चौपाई गढ़ी, क्या रैदास कठौती याद नहीं?
न याद तुम्हे गौतम–महावीर, तुम भूल गये नानक– कबीर!
तुम दीन–ए–इलाही भूल गये, तुम गङ्गा की संतान नहीं!
हर! हर!! गङ्गे की तान बड़ी, पर इसमें अब कुछ प्राण नहीं।
ए नये भारत के दिन.........
हा! कैसी है हम संतानें!!
जो मार रही खुद ही मां को, कुछ जाने.... कुछ अनजाने।
सिर्फ मल बहाना याद हमें, सीने पर बस्ती खूब बसी।
अपनी गङ्गा को बांध–बांध, सिर्फ बिजली बनाना याद रहा।
वे कुंभ कहां? भगीरथ है कहां? गङ्गा किससे फरियाद करे?
ए नये भारत के दिन.........
गङ्गोत्री से गङ्गासागर तक... अब एक ही अपना नारा है!
हमने तो अपना जीवन भी, अब गङ्गा जी पर वारा है।
जो बांध रहे.. उनको बांधें, जो बचा रहे.. उनको साधें।
सिर्फ मात नहीं...... मां से बढ़कर, यह बात सदा ही याद रहे।
ए नये भारत के दिन.........

श्री राजेंद्र भाई के साथ मिलकर गङ्गा पुनर्जीवन संदेश को कागज पर उतारने के मेरे सौभाग्य ने यह गीत रचा।

● अरुण तिवारी

अमृत मंथन

दुनिया में दो तरह के व्यक्ति होते हैं; देव और दानव। जो बिना किसी का नुकसान किए अपने श्रम और निष्ठा से फल की इच्छा रखते हैं और इस फल से सभी का शुभ् चाहते हैं.. उन्हें हम देवता कहते हैं। जो बिना श्रम किए फल पाना चाहते हैं और अपनी इस इच्छा की पूर्ति के लिए दूसरों को नष्ट करने.. दूसरों का बिगाड़ करने से भी परहेज नहीं करते .. वे दानव कहलाते हैं।

दानवों और देवताओं में संघर्ष हमेशा रहा । शक्ति और संख्या तो दानवों की ही कम रही, लेकिन वे अपनी लक्ष्य प्राप्ति के लिए सदैव संगठित व हठी रहे; जैसे कि आज के आर्थिक संगठन.. बाजार और उद्योग। इनमें से जो धरती से अन्न उगाने वाले किसानों व अन्य श्रमनिष्ठ उत्पादकों को भूखा मारते हैं, उपभोक्ताओं को लूट कर अपनी जेब भरते हैं और धरती- प्रकृति को प्रदूषित करते हैं.. वे दानव ही हैं। लेकिन ये संगठित हैं, इसलिए बाजार.. धरती, प्रकृति और मानवता पर हावी है। सभी के शुभ् की चाहत रखने वाले संख्या में आज भी ज्यादा हैं, लेकिन ये बिखरे हुए हैं। हालांकि ये दूसरों को कष्ट नहीं देते; दूसरों का कष्ट अपने ऊपर लेते हैं। अपना सब कुछ लुटा कर भी चुप रहना इनका स्वभाव बन गया हैं। इनके इस अच्छे स्वभाव को दूसरे कमजोरी समझ बैठे हैं.. जबकि यह कमजोरी है नहीं।

यह चित्र पुराणों में जों का त्यों मिलता है। अमृत की खोज की पहल देवताओं ने की। दानव भी इसमें साथ जुटे। अमृत मिला तो देवता चेते कि दानवी शक्तियों को अमृत मिलना शुभ् नहीं हैं। अमृत जल पर तो सिर्फ श्रमनिष्ठ और सबके शुभ् की चाहत रखने वालों का ही अधिकार है। लेकिन एक दानव छल से देव रुप धारण कर देवताओं की पंक्ति में बैठ गया। रुप या पहनावा तो किसी दानव को देवता नहीं बना सकता। पोल खुल गई। तब तक दानव अमृत पी चुका था।

आज भी देवता और दानव अमृत पाने में लगे हैं। लेकिन दोनों की अमृत खोज भिन्न है। दानव अपने अमृत की तलाश बाजार में कर रहे हैं, तो देवता नदी, समुद्र और रेगिस्तान में अपने श्रम और सभी के शुभ् को जोड़कर जगह-जगह अमृत कलश स्थापित करने में लगे हैं। ये अमृत सबकी जरूरत पूरी करने वाला बने..यह इन सकारात्मक शक्तियों का लक्ष्य है। दानव प्रकृति से लूटा हुआ अमृत बाजार में बेच कर फल पाना चाहते हैं। जल का बाजार, जीवन का बाजार, अमृत का बाजार .. सब कुछ बाजार के हवाले हो गया है। इसने रेगिस्तान और समुद्र मंथन से अमृत पाने की चाह अब खत्म कर दी है। बिना साधना .. श्रम के अमृत कैसे हासिल हो? सब इसी में लगे हैं। इसीलिए अब कुंभ में लोग अमृत मंथन करने नहीं, अपने पाप धुलने जाते हैं। जहां एकत्र होते हैं, वहां गंदगी और विकृति ही छोड़ जाते हैं।

इसी से आज अमृत जल दुर्लभ हो गया है।

आज फिर अमृत मंथन करने वाले कुंभ आयोजित करने की आवश्यकता हैं.. ऐसे कुंभ, जो रेगिस्तान और समुद्र में भी अमृत पा सके। क्योंकि समुद्र और रेगिस्तान में खोजा जल ही अमृत है। यह तभी संभव है जबकि पहले हमारी नदियां गंगा बनें और भूजल.. शुद्ध और सहज।

राजेंद्र सिंह

॥ कहहु सुनहु करहु अब सोई
जइसे गङ्ग पुनि सुरसरि होई ॥